नित्यकर्म गुटका



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री अर्जुनदास कोहार्टी



श्रीगणेशाय नमः।

नित्यकर्म गुटका

सन्ध्योपासन, तर्पण, पूजन, भजन, आरती, कमलनेत्र
स्तोत्र, हनुमान चालीसा, तीन सूक्त,
चर्पट पंजरी आदि से समलंकृत।

संग्रहकर्ता

श्री अर्जुनदास कोहाटी

प्रबन्धक : श्री सनातनधर्म सभा
शंकर रोड, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

प्रकाशक

श्री सनातनधर्म सभा (रजि०)

शंकर रोड, राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-६०

प्रथम बार १०००] [सन् १९७७

पुस्तक भेंट : सवा रुपया

विषय-सूची

भूमिका

यह '**नित्यकर्म गुटका**' देश-विभाजन से बहुत पहले सन् १९२५ में पं० भीमसेन शर्मा जी के द्वारा संगृहीत एवं सनातन-धर्म युवक सभा, क्वेटा द्वारा प्रकाशित किया गया था। अनेक सनातनधर्मी बन्धु इसके अनुसार सन्ध्योपासन, हवन आदि नित्यकर्म कर पुण्योपार्जन करते रहे। अब यह पुस्तक अप्राप्य थी; अतः इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित करने के लिए मुझे **रायसाहब श्री शालिगराम जी आनन्द**, प्रधान श्री सनातनधर्म सभा, शंकर रोड, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली ने उत्साहित किया। मैंने **पण्डित फकीरचन्द जी शास्त्री** और **श्री लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री** से पुनःसंपादन की प्रार्थना की। दोनों विद्वानों ने प्राचीन पुस्तक के आधार पर इसका नये रूप में सम्पादन किया और इसमें आये हुए अनेक श्लोकों तथा मंत्रों के अर्थ भी लिखकर समाविष्ट किये।

उन्होंने इस संपादन को अधिक उपयोगी बनाने के लिए राष्ट्रपति-सम्मानित एवं पुरस्कृत संस्कृत के महान् विद्वान् कविरत्न **श्री अमीरचन्द्र जी शास्त्री** उपप्राचार्य श्री लालबहादुर शास्त्री, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ १/६ शान्तिनिकेतन, नई दिल्ली से अनुरोध किया कि वे इस पुस्तक पर अपनी कृपादृष्टि डालें और अन्य जिन विषयों का समावेश आवश्यक हो, वे कर दें। शास्त्री जी ने ब्रह्मादि देवत्रयी और नवग्रह की पूजा के मन्त्रों का तथा पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त और रुद्रसूक्त का भी इसमें समावेश कर दिया और महीधर, उव्वट और सायणभाष्य के आधार पर इन समस्त मन्त्रों का हिन्दी में अनुवाद भी लिखने का अनुग्रह किया। इन सूक्तों से सर्वदेव और देवियों के विधिवत् पूजन में पंडितों और भक्तों को महान् सहायता मिलेगी। अतः

मैं **श्री अमीरचन्द्र जी शास्त्री** का हृदय से आभारी हूँ।

पूर्ण तो एक परमेश्वर ही है। तथापि मेरे दयालु विद्वानों ने निःस्वार्थ भाव से सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय और सर्वजनाभ्युदयाय इस पुस्तक को अनेक दृष्टियों से उपयोगी बनाकर जो मेरा सहयोग किया है उसके लिये मैं उनका सदा ऋणी रहूंगा। मैं सनातनधर्म सभा की ओर से अपने सहयोगी श्रद्धेय पण्डितों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि सनातनधर्मी संस्थाएँ और व्यक्ति इस ग्रन्थ को आदर देंगे, अपनाएँगे और इसके द्वारा अपना जीवन सफल बनायेंगे।

एक बार फिर मैं **रायसाहब शालिगराम जी आनन्द** का धन्यवाद करता हूँ जिनकी प्रेरणा से यह गुटका आपके कर-कमलों में विद्यमान है।

विनीत
अर्जुनदास

ॐ

दैनिक विशेष कृत्य

प्रातःकाल उठते ही प्रत्येक व्यक्ति भगवान् को स्मरण करे और नीचे लिखे श्लोकों से प्रार्थना करे—

त्रैलोक्य-चैतन्यमयादिदेव श्रीनाथ विष्णो भवदाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ।।१।।

अर्थ—हे तीनों लोकों के चैतन्य रूप, हे आदिदेव, हे लक्ष्मी-पति, हे विष्णुदेव ! मैं सवेरे उठकर आपके प्रिय कार्य करूँगा और आपकी आज्ञा से सांसारिक यात्रा (जीवन के कार्य) करूँगा ।

सुप्तः प्रबोधितो विष्णो हृषीकेशेन यत्त्वया ।
यद् यत् कारयसे कर्म तत् करोमि तवाज्ञया ।।२।।

अर्थ—हे विष्णुदेव ! आप हृषीकेश ने मुझे सोये हुए से जगाया है । अब आप दिन भर मुझसे जो जो काम करायेंगे, मैं आपकी आज्ञा से वही-वही काम करूँगा ।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले च गोविन्दः प्रभाते कर-दर्शनम् ।।३।।

अर्थ—हाथ के अग्र भाग में लक्ष्मी रहती है और हाथ के मध्य में सरस्वती का वास है। तथा हाथ के मूल में श्री गोविन्द जी का निवास है अतः प्रातःकाल हाथ का दर्शन किया जाता है।

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।४।।

अर्थ—हे पृथ्वी मातः ! हे देवि ! तुमने समुद्रों के तो वस्त्र धारण कर रखे हैं और पर्वत तुम्हारा स्तनमण्डल है । हे विष्ण

पत्नी ! तुम्हें नमस्कार हो तुम मेरे पैर के स्पर्श को क्षमा करना।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषणः ।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ।।५।।

अर्थ—अश्वत्थामा, राजा बलि, महर्षि व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम—ये सात चिरजीवी हैं।

सप्तैतान् स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयं तथाष्टमम् ।

जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्यु-विवर्जितः ।।६।।

अर्थ—जो इन (ऊपर कहे गये चिरजीवियों) को नित्य प्रातःकाल स्मरण करता है और आठवें 'मार्कण्डेय' जी को भी स्मरण करता है वह अकाल मृत्यु से छुटकारा पाकर सौ साल से भी अधिक जीता है।

विशेष ज्ञातव्य—किसी भी बालक या व्यक्ति के जन्मदिवस पर भी पीछे दिये गये आठ चिरजीवियों का पूजन और दान करना चाहिए।

जनेऊ को दाहिने कान पर चढ़ाकर शौचादि क्रिया के लिए जंगल में जाकर मलत्याग से पहले निम्नलिखित श्लोक पढ़े। मलमूत्र त्यागते समय प्रातः सायं उत्तर की ओर मुख हो और रात को दक्षिण की ओर मुख हो।

देवता ऋषयः सर्वे पिशाचोरगराक्षसाः ।

इतो गच्छन्तु ते सर्वे बहिर्भूमिं करोम्यहम् ।।

अर्थ—सब देवता, ऋषि, पिशाच, सर्प और राक्षस—ये सब यहाँ से चले जायें; मैं यहाँ शौच करता हूँ।

मल त्यागने के बाद तीन बार बायें हाथ को और चार बार दोनों हाथ मिलाकर साफ मिट्टी से शुद्ध करें और बारह बार कुल्ला करें तथा पाँव अवश्य धोने चाहिएँ। पश्चात् इस श्लोक

को पढ़कर दातुन करें—

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशु-वसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

अर्थ—हे वनस्पति से निर्मित दातुन ! तू मुझे आयु, बल, यश, तेज, प्रजा पशु, धन, ब्रह्मज्ञान की बुद्धि और मेधा को प्रदान कर ।

नीचे लिखे श्लोक से जल को अभिमन्त्रित करके स्नान करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥

अर्थ—हे गंगे, हे यमुने, हे गोदावरि, हे सरस्वति, हे नर्मदे, हे सिन्धु नदि और हे कावेरि ! आप सब इस जल में पधारें ।

यदि यज्ञोपवीत बदलना हो तो दस बार गायत्री मन्त्र पढ़कर नीचे लिखे मन्त्र से नया जनेऊ धारण करें—

जनेऊ धारण करने का मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

अर्थ—यह यज्ञोपवीत परम पवित्र है। इसे पहले प्रजापति ने बनाया। आयु बढ़ाने वाले, श्रेष्ठ, श्वेत इस यज्ञोपवीत को धारण करो। यही मनुष्य के लिये बलप्रद और तेजःप्रद है ।

पुराना जनेऊ उतारने का मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतं यदि जीर्णवन्तं विद्याधिवेद्यं परब्रह्म-सत्यम् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं विसृजन्तु तेजः ॥

अर्थ—विद्या द्वारा जानने योग्य, परब्रह्म सत्यस्वरूप, आयु-वर्धक, श्रेष्ठ शुभ्र, तेजोरूप यज्ञोपवीत यदि जीर्ण हो जाये तो उसे त्याग दें।

अपने मस्तक पर तिलक लगाने का मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

अर्थ—सुगन्धियुक्त, पुष्टिवर्धक तीन नेत्रों वाले शिव का मैं पूजन करता हूँ। जैसे खरबूजा बेल से छूटकर मुक्त हो जाता है उसी प्रकार शिव जी मुझे मृत्यु से मुक्त करें और मुझे अमृतमार्ग (मोक्ष) का प्रदर्शन करें।

सायंकाल दीप-नमस्कार

सायंकाल दीप जलाकर इस मंत्र से दीपक को नमस्कार करें—

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप! नमोऽस्तु ते॥

अर्थ—यह दीपक परब्रह्मरूप ज्योति है, यह दीपक जनार्दन विष्णुरूप ज्योति है। दीपक मेरा पाप दूर करे। हे सन्ध्याकाल के दीप! तुम्हें मेरा नमस्कार हो।

रात को सोते समय भगवान् का ध्यान करते हुए यह श्लोक पढ़ें—

जले रक्षतु विघ्नेशः स्थले रक्षतु सिद्धिदः।
अटव्यां गणनाथस्तु सर्वतस्तु गजाननः॥

अर्थ—विघ्नों का हरण करने वाले गणेश मेरी जल में रक्षा करें, सिद्धियों के दाता गणेश मेरी स्थल में रक्षा करें। गणों के स्वामी श्रीगणेश मेरी वन में रक्षा करें और गजानन गणेश मेरी सब जगह रक्षा करें।

॥ ॐ ॥

श्रीगणेशाय नमः

सन्ध्योपासन विधि

ब्राह्म मुहूर्त में सूर्योदय से पूर्व शयन से उठकर भगवान् का स्मरण करें। फिर शौच-स्नान के अनन्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके पवित्र तथा एकांत-स्थान में कुशासन अथवा कम्बल आदि के आसन पर पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें।

सबसे पहले गायत्री-मन्त्र का उच्चारण करके शिखा बाँध लें। यदि शिखा पहले से ही बँधी हो तो दाहिने हाथ से उसका स्पर्श कर लें। एक जोड़ा शुद्ध यज्ञोपवीत धारण किए रहना आवश्यक है। फिर किसी पात्र में जल रखकर उसे बायें हाथ में उठा लें और कुशा से, पुष्प से या अपने दायें हाथ की उंगलियों से अपने शरीर पर जल सींचते हुए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
विष्णुः पुण्डरीकाक्षः पुनातु माम्।

अर्थ--मनुष्य अपवित्र हो या पवित्र अथवा किसी भी दशा में स्थित हो, जो पुण्डरीकाक्ष (कमलनयन) भगवान् विष्णु का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर सब ओर से शुद्ध हो जाता है। पुण्डरीकाक्ष भगवान् विष्णु मुझे पवित्र करें।

अब दायें हाथ में जल लेकर नीचे लिखे विनियोग को पढ़कर जल छोड़ दे—

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः।

फिर नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए आसन पर जल छिड़ककर दायें हाथ से उसका स्पर्श करें।

ॐ पृथिव त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

अर्थ—हे पृथ्वी देवि ! तुमने सम्पूर्ण लोकों को धारण कर रखा है और भगवान् विष्णु ने तुमको धारण किया है। हे देवि ! तुम मुझे धारण करो और मेरे आसन को पवित्र कर दो।

इसके बाद मस्तक पर यज्ञ-भस्म, चन्दन, शुद्ध मृत्तिका अथवा जल का तिलक धारण करें।

तत्पश्चात् नीचे लिखे तीनों मन्त्रों को पढ़कर प्रत्येक से एक-एक बार जल से आचमन करें—

ॐ केशवाय नमः स्वाहा।

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।

ॐ माधवाय नमः स्वाहा।

तीन बार आचमन करने के पश्चात्

ॐ गोविन्दाय नमः।

यह मन्त्र पढ़कर हाथ धो लें।

तदनन्तर हाथ में जल लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़कर वह जल भूमि पर गिरा दें—

ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्वेत-वाराहकल्पे, जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्तैकदेशांतरगते पुण्यक्षेत्रे, कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे (२०३४ संवत्सरे) अमुकमासे (चैत्र मासे) अमुक-पक्षे (शुक्ल/कृष्ण पक्षे) अमुक तिथौ (द्वितीयायाम्

तिथौ)[1] अमुकवासरे (रविवासरे) अमुकगोत्रोत्पन्नोहं कश्यप/शांडिल्य गोत्रोत्पन्नोहम्) अमुक शर्माहं (मोहन-लाल शर्माहं/वर्माहं/गुप्तोऽहम्) ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रातः (सायं/मध्याह्न) संध्यो-पासनं करिष्ये ।

इसके बाद जल लेकर निम्नलिखित विनियोग पढ़ें और जल भूमि पर छोड़ दें—

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ।

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर एक बार आचमन करें और हाथ धो लें :—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवाद-धिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

अर्थ—[महाप्रलय के बाद महाकल्प के आरम्भ में] सब ओर से प्रकाशमान तपरूप परत्मात्मा से ऋत (सत्संकल्प) और सत्य (यथार्थ भाषण) की उत्पत्ति हुई । उसी परमात्मा से रात्रि और दिन प्रकट हुए तथा उसीसे जलमय समुद्र का आविर्भाव

---

१. 'अमुक' शब्द के स्थान पर संवत्सर, मास, पक्ष, तिथि, वार, गोत्र का नाम लेना चाहिए । ब्राह्मण अपने नाम के आगे 'शर्मा', क्षत्रिय 'वर्मा' और वैश्य 'गुप्त' शब्द का प्रयोग करें ।

हुआ। जलमय समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् दिनों और रात्रियों को धारण करने वाला कालस्वरूप संवत्सर प्रकट हुआ जो चर (पलक मारने वाले जङ्गम प्राणियों) और अचर (स्थावरों) से युक्त समस्त संसार को अपने अधीन रखने वाला है। इसके बाद सबको धारण करने वाले परमेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, दिव् (स्वर्ग-लोक), पृथिवी, अन्तरिक्ष आदि लोकों की भी पूर्वकल्प के अनुसार सृष्टि की।

तदनन्तर चार बार जल लेकर नीचे लिखे विनियोगों को पढ़ें और जल छोड़ें—

(१) ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

(२) ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुप् बृहती पंक्ति-त्रिष्टुब्जगत्यश्छंदांसि अग्नि-वाय्वादित्य-बृहस्पति-वरुणेन्द्र-विश्वेदेवा देवताः अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

(३) ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीछन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः।

(४) ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्रीछंदो ब्रह्माग्नि-वायु-सूर्या देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

इसके पश्चात् आसन पर स्थिर बैठकर, आंखें बन्द करके मौन गायत्री मन्त्र के अर्थ का ध्यान करता हुआ आगे लिखे मन्त्र से प्राणायाम आरम्भ करें। प्राणायाम की विधि इस प्रकार है—

पहले दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका का दायाँ छिद्र बंद करके बायें छिद्र से वायु को अन्दर खींचे, साथ ही नाभि कमल में श्यामवर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए प्राणायाम-मन्त्र का तीन बार पाठ कर जायें। [यदि तीन बार मन्त्र-पाठ न हो सके तो एक बार पाठ करें और अधिक के लिए अभ्यास करें।] इसको 'पूरक' कहते हैं।

पूरा श्वास भर जाने पर दायें हाथ की तीसरी और चौथी उँगली से बायें नथने को दबाकर श्वास को रोक लें और प्राणायाम-मंत्र का तीन बार (या शक्ति के अनुसार एक बार) पाठ करें। इस समय हृदय के बीच कमल के आसन पर विराजमान रक्त-वर्ण चतुर्भुज ब्रह्माजी का ध्यान करें। यह 'कुम्भक'-क्रिया है।

इसके बाद अँगूठा हटाकर नासिका के दाहिने छिद्र से वायु को धीरे-धीरे तब तक बाहर निकालें जब तक प्राणायाम-मन्त्र का तीन बार (या एक बार) पाठ न हो जाय। इस समय अपने ललाट में परम गौर वर्ण वाले त्रिनेत्रधारी भगवान् शंकर का ध्यान करें। यह 'रेचक'-क्रिया है। (यह सब मिलकर एक प्राणायाम कहलाता है)।

प्राणायाम का यह मन्त्र है—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

अर्थ—जो ईश्वर भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महलोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक इन सातों लोकों में व्याप्त

है। उस सविता (संसार को उत्पन्न करने वाले) देव के दिव्य तेज का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को सत् कार्यों की ओर प्ररित करे।

(फिर उसी तेज का वर्णन करते हुए कहते हैं—) वह जल-स्वरूप, ज्योतिस्वरूप, रसस्वरूप (आनन्दस्वरूप) और अमृत-स्वरूप (मोक्षस्वरूप) है वही भूर्भुवः स्वः स्वरूप से त्रिभुवनात्मक ब्रह्म है। वह उक्त स्वरूपों वाला तेज हमें बुद्धि प्रदान करे।

विशेष वक्तव्य--यहां आचमन के लिए प्रातःकाल की संध्या का अलग विनियोग और मन्त्र है; मध्याह्न की सन्ध्या का अलग है और सायंकाल की संध्या का अलग। क्रम से देखिए—

प्रातःकाल का विनियोग और मन्त्र

प्रातःकाल जल लेकर नीचे लिखा विनियोग पढ़ें और जल छोड़ दें।

ॐ सूर्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करें और हाथ धो लें।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

अर्थ—सूर्य, क्रोध के अभिमानी देवता और क्रोध के स्वामी —ये सभी क्रोध से किए हुए पापों से मेरी रक्षा करें। रात में

मैंने मन, वाणी, हाथ, पैर, उदर और शिश्न (उपस्थ) इन्द्रियों से जो पाप किए हों, उन सबको रात्रि का अधिष्ठातृ देवता नष्ट करे। जो कुछ भी पाप मुझमें वर्तमान है उसको और उसके करने वाले अपने आपको मैं मोक्ष के कारणभूत एवं प्रकाशमय सूर्यरूप परमेश्वर में हवन करता हूँ जिससे मेरे पाप और मेरा अभिमान नष्ट हो जाये।

मध्याह्न काल का विनियोग और मंत्र

जल लेकर नीचे लिखा विनियोग पढ़ें और जल छोड़ दें—

ॐ आपः पुनंत्विति मन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

अब नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करें और हाथ धो लें—

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिः ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रह ँ स्वाहा।

अर्थ—जल पृथ्वी को पवित्र करे। पवित्र हुई पृथ्वी मुझे पवित्र करे। ब्रह्मस्पति अर्थात् ज्ञान के एकमात्र स्वामी परब्रह्म परमात्मा, जो ब्रह्मज्ञान से पूर्ण पवित्र है, वह मुझे पवित्र करे। जो जूठा और अखाद्य मैंने खा लिया हो अथवा कोई बुरा काम मैंने कर लिया हो (असतां च प्रतिग्रहम्) तथा असद् व्यक्तियों द्वारा ग्रहण करने योग्य मैंने ग्रहण कर लिया हो उस सबको यह जल पवित्र करे।

सायंकाल के आचमन का विनियोग और मन्त्र

जल लेकर नीचे लिखा विनियोग पढ़कर जल छोड़ दें—

ॐ अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्नि-र्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करें और हाथ धो लें—

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं मामृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।।

अर्थ—अग्नि, क्रोध के अभिमानी देवता और क्रोध के स्वामी—ये सभी क्रोध से किये हुए पापों से मेरी रक्षा करें । मैंने दिन में मन, वाणी, हाथ, पैर, उदर और शिश्न (उपस्थ) इन्द्रिय से जो पाप किये हों उन सबको दिन के अधिष्ठातृ देवता नष्ट करें । जो कुछ भी पाप मुझमें वर्तमान है उसको तथा उसके करने वाले अपने आपको मैं मोक्ष के कारणभूत एवं सत्यस्वरूप प्रकाशमय परमेश्वर में हवन करता हूँ जिससे मेरा पाप और मेरा अभिमान नष्ट हो जायें ।

इसके बाद निम्नलिखित मार्जन विनियोग को पढ़ें और जल छोड़ दें—

ॐ आपो हि ष्ठेति त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषि-र्गायत्रीछन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः ।

विनियोग के पश्चात् लिखे सात मन्त्रों को पढ़ते हुए सिर पर जल सींचें । आठवें मन्त्र से पृथ्वी पर जल डालें—और फिर नौवें मन्त्र से सिर पर जल सींचें ।

मार्जनमन्त्र ये हैं—

(१) ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः ।
(२) ॐ ता न ऊर्जे दधातन ।
(३) ॐ महे रणाय चक्षसे ।
(४) ॐ यो वः शिवतमो रसः ।
(५) ॐ तस्य भाजयतेह नः ।
(६) ॐ उशतीरिव मातरः ।
(७) ॐ तस्मा अरङ्गमाम वः ।
(८) ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
(९) ॐ आपो जनयथा च नः ।

अर्थ—हे जल देव ! तुम निश्चय ही कल्याणकारी हो । तुम बल की वृद्धि के लिए (अन्नादि रसों द्वारा) शक्ति प्रदान करो। हमें अपने महान रमणीय रूप के दर्शन के योग्य बनाओ । हे जलदेव रूप भगवन् ! तुम्हारा जो कल्याणरूप अमृत रस है, हम उसके भागी बनें । जैसे प्रेमयुक्त माता अपने दुग्ध से वालक को पालती है उसी प्रकार तुम्हारे अमृतमय रस से हम तृप्त रहें । हे जलरूप परमात्मन् ! आप जिस रस से संसार को तृप्त करते हैं उससे हमें भी तृप्त करें और हमें उस रस के भोगने (सेवन करने) में प्रवृत्त करें ।

तदनन्तर जल लेकर इस विनियोग को पढ़े और जल छोड़ दें—

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ।

अब नीचे लिखे मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके और

उसे अपने मस्तक से लगाकर छोड़ दें।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

अर्थ—जैसे पादुका (खड़ाऊँ) से अलग होने पर पैर पादुका के चुभन आदि कष्टों से मुक्त हो जाता है, पसीने आदि से भीगा शरीर स्नान करने से दुर्गन्ध एवं मैल से रहित हो जाता है और जैसे तपाकर छानने से घी शुद्ध हो जाता है उसी प्रकार यह जल देवता मुझे पापों से दूर कर शुद्ध करे।

अब जल लेकर नीचे लिखा अघमर्षण विनियोग पढ़ें और जल छोड़ दें—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीधात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथ्वीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥

वक्तव्य—इस मन्त्र का अर्थ पहले दिया जा चुका है।

अब फिर जल लें और नीचे लिखा विनियोग पढ़कर जल छोड़ दें—

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर आचमन करें—

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

अर्थ—हे जलरूप परमात्मन्! तुम सब प्राणियों के भीतर

उनकी हृदयरूप गुफा में विचरते हो । तुम्हारा सब ओर मुख है अर्थात् सर्वत्र व्यापक हो । तुम ही यज्ञ हो, तुम ही वषट्कार (इन्द्रादि देवताओं का भाग हविष्य) हो, तुम ही जलस्वरूप, ज्योतिस्वरूप, रसरूप और अमृतस्वरूप हो ।

सूर्यदेव को अर्घ्य प्रदान

दोनों हाथों में पुष्पयुक्त जल की अंजलि भरकर नीचे लिखे गायत्री मंत्र को पढ़कर सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

उपस्थान के लिए चार विनियोग

चार बार हाथ में जल लेकर और नीचे लिखे १-१ विनियोग को पढ़कर जल छोड़ते जायें—

ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥१॥

ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥२॥

ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥३॥

ॐ तच्चक्षुरित्यस्य दध्यंगाऽथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥४॥

उपस्थान की विधि

तदनन्तर प्रातःकाल केवल बायें पैर से अथवा पैर की

एड़ी के बल खड़ा होकर और सायंकाल बैठे हुए ही खुली अंजलि मिलाकर तथा मध्याह्न में खड़ा होकर दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर सूर्य की ओर देखते हुए नीचे लिखे चार उपस्थान के मन्त्रों को पढ़कर प्रणाम करें—

ॐ उद्वयं तमसस्परि पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥

अर्थ—हम अंधकार से ऊपर उठें और देवलोक में, देवताओं में उत्तम सूर्यदेव को देखते हुए उत्तम ज्योतिर्मय परमात्मा को प्राप्त करें।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥

अर्थ—केतवः अर्थात् सूर्य की किरणें, ऊपर उठते हुए और संसार में उत्पन्न प्राणियों के विषय में सब कुछ जानने वाले (सर्वकर्मसाक्षी) भगवान् सूर्य को, संसार के लोगों को उनका दर्शन कराने के लिए (उदयाचल से) ऊपर ला रही हैं।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥३॥

अर्थ--जो सूर्य तेजोमयी किरणों के पुञ्ज हैं। मित्र, वरुण तथा अग्नि देवताओं एवं समस्त विश्व के नेत्रस्वरूप हैं और भगवान् सूर्यदेव स्थावर तथा जङ्गम—सबके अन्तर्यामी आत्मा हैं। वे भगवान् सूर्य आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्ष लोक को अपने प्रकाश से देदीप्त करते हुए आश्चर्य रूप से उदित हुए हैं।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम

शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ शृणुयाम शरदः, शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

अर्थ—वह तेजोरूप नेत्र और देवताओं के हितकारी सूर्य पूर्व दिशा में (शुक्रम्) स्वच्छ (देदीप्त रूप में) उदित हो रहे हैं। (उनकी कृपा से) हम सौ वर्ष तक देखते रहें, सौ वर्ष तक जीवित रहें, सौ वर्ष तक सुनते रहें, सौ वर्ष तक बोलें, सौ वर्ष तक दीनता से रहित हों और सौ वर्ष से अधिक भी ऐसे ही हों। अर्थात् सूर्य की कृपा से हम सौ वर्ष तक सभी इन्द्रियों से पूर्ण स्वस्थ रहकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करें।

अंगन्यास विधि

एक-एक मंत्र से उस उस अंग को दायें हाथ से स्पर्श करें—

ॐ हृदयाय नमः। (हृदय पर हाथ लगायें)

ॐ भूः शिरसे स्वाहा। (सिर पर हाथ लगायें)

ॐ भुवः शिखायै वषट्। (शिखा पर हाथ लगायें)

ॐ स्वः कवचाय हुम्। (दोनों कन्धों पर हाथ लगायें)

ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और माथे पर दो उंगलियों को लगायें।

ॐ भूर्भुवःस्वः अस्त्राय फट्। (बायें हाथ पर दायें हाथ से ताली का शब्द करें।

इस अंगन्यास की विधि को तीन बार करें।

गायत्री जप के लिए तीन विनियोग करें—

१. ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः ।

२. ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदाः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवाय्वादित्या देवताः जपे विनियोगः ।

३. ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ।

गायत्री के आवाहन का विनियोग

ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दः गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

गायत्री के आवाहन का मन्त्र

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।

विधि—दोनों हाथ जोड़कर मन में गायत्री देवी का आवाहन करें ।

अर्थ—हे भगवती गायत्रो देवी ! तुम तेजोरूपा हो, बलरूपा हो, अमृतरूपा हो, दीप्तिस्वरूपा हो । देवताओं की सर्वाधिक प्रिय हो, तथा देवपूजन की साधनभूत हो अर्थात् सभी देवों की पूजा तुम्हारे मन्त्र द्वारा ही होती है । (मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ) ।

गायत्री उपस्थान मन्त्र

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि । नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे

सावदोमा प्रापत् । (हाथ जोड़कर नमस्कार करें) ।

अर्थ—हे गायत्री देवी ! तुम त्रिलोकी रूप से एकपदी हो। त्रयीविद्या (वेदत्रयी) रूप से द्विपदी हो प्राणादि रूप से त्रिपदी हो और परोरजा (रज से ऊपर उठकर सूर्य मंडल में विद्यमान होने के) रूप से चतुष्पदी हो। तुम अपद हो अर्थात् एक स्थान पर न होने से सर्वत्र व्यापक (ब्रह्मरूप) हो इसलिए जानी नहीं जाती। तुम्हें नमस्कार हो। तुम्हारा (दर्शनीय-अनुभव करने योग्य) रजोगुण से परे तुम्हारे इस स्वरूप को पुनः नमस्कार हो। (अन्त में भक्त प्रार्थना करता है—) हे देवि ! मुझे पाप प्राप्त न हों (अर्थात् तुम्हारी कृपा से मैं पापों से रहित होकर तुम्हें प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहूँ।)

गायत्री प्रार्थना (स्वरूपवर्णन)

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ।
आदित्यमंडलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ।।

अर्थ—(गायत्री के स्वरूप का वर्णन करते हैं)—) वह गायत्री श्वेत वर्णवाली कही गई है तथा रेशमी वस्त्र धारण किए हुए है। सफेद चन्दन, सफेद पुष्पों और आभूषणों से सुशोभित है। वह गायत्री सूर्यमंडल में अथवा ब्रह्मलोक में स्थित है। वह देवी रुद्राक्ष माला को धारण किये हुए है और वह शुभ देवी कमल के आसन पर विराजमान है। मैं ऐसे स्वरूप वाली गायत्री देवी का ध्यान करता हुआ उसे झुककर प्रणाम करता हूँ।

जप विधि

इस प्रकार उपासक चन्दन अथवा रुद्राक्ष की माला लेकर

उसे पवित्र वस्त्र से ढककर मन में गायत्री के दिव्य स्वरूप का ध्यान करता हुआ नीचे लिखे गायत्री मन्त्र का १०८ बार जप करे। यदि चाहे तो यथाशक्ति अधिक मालाएँ भी जपी जा सकती हैं।

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

अर्थ—जो भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक रूप परब्रह्म है तथा जो चराचर जगत् को उत्पन्न करने वाला परमात्मा है, हम उसके परम श्रेष्ठ तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करे।

जप के बाद हाथ में जल लेकर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जल छोड़ दे—

अनेन गायत्री जपेन श्रीसविता देवता प्रीयताम्।

अर्थ—इस गायत्री जप से श्री सूर्यदेव प्रसन्न हों।

गायत्री विसर्जन मन्त्र

नीचे के इस मन्त्र को पढ़कर हाथ जोड़कर नमस्कार कर गायत्री का विसर्जन करे—

ॐ उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम्॥

अर्थ—हे गायत्री देवि! पृथ्वी में पर्वत की चोटी पर, उत्तम शिखर पर (अर्थात् ब्रह्मलोक या सूर्यलोक में) तुम विराजमान हो। तुम ब्राह्मणों (ब्रह्मवेत्ताओं) से जानी गई हो। अब सुखपूर्वक अपने निवास-स्थान को जाओ। (और फिर आवाहन करने पर अवश्य दर्शन देना)।

अब नीचे के इस मन्त्र को पढ़कर अपने स्थान पर खड़े होकर सूर्यदेव की एक बार प्रदक्षिणा करें—

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

अर्थ—वे एकमात्र परमात्मा पृथ्वी और आकाश की रचना करते समय धर्माधर्मरूप भुजाओं और पतनशील पंच महाभूतों से काम लेते हैं। उनके सब ओर नेत्र हैं, सब ओर मुख हैं, सब तरफ भुजाएँ हैं और सब ओर चरण हैं अर्थात् वह सर्वव्यापक हैं।

प्रदक्षिणा का यह श्लोक भी पढ़ें—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

अर्थ—अर्थ इस जन्म में या दूसरे जन्म में जो कोई भी पाप हों वे सब प्रदक्षिणा के एक-एक कदम में नष्ट हो जाते हैं।

प्रदक्षिणा के बाद नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सूर्यदेव को नमस्कार करें—

ॐ देवा गातु विदो गातु वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देवयज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः।

अर्थ—हे देवताओ, आप लोग इस जपरूपी यज्ञ को पूर्ण हुआ जानकर अपने गन्तव्य स्थान को पधारें। हे चित्त के प्रवर्तक परमेश्वर! मैं इस जप यज्ञ को आपके अर्पण करता हूँ। आप इसे वायु देवता में स्थापित करें (क्योंकि वायु में ही यज्ञ की स्थिति है)।

इस प्रकार सूर्यदेव को नमस्कार करके आचमन करके उठ खड़ा होवे।

इति सन्ध्योपासन विधिः।

ॐ

अथ तर्पणम्

तर्पण करने की विधि

सन्ध्योपासन के बाद पूर्व की ओर मुख करके दोनों हाथों की चौथी उंगली (अनामिका) में कुशा से बनी पवित्री पहनकर एक त्रिकुश. जिसका मुंह पूर्व की ओर हो, एक पात्र में रखकर, तर्पण का जल त्रिकुश के मुंह पर गिरावे और त्रिकुश दाहिने हाथ में ले ले और नीचे लिखे हुए संकल्प को पढ़ता हुआ देवता आदि का आवाहन करे।

ध्यान रहे तर्पण करने से पहले धोती, अंगोछा आदि जिससे स्नान किया गया हो, निचोड़ना नहीं चाहिए।

संकल्प

ॐ विष्णवे नमः ३। हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्री-ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथम-चरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तः) अहं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

आवाहन

ओं ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर-वर्तिनः ॥

अर्थ—ब्रह्मा आदि सब देवता तथा सनकादि ऋषि जो महानुभाव ब्रह्माण्ड में रहते हैं वे सब यहां आवें।

इस प्रकार ब्रह्मा आदि देवताओं का आवाहन कर उन्हें कुशासन दे और कुशाओं द्वारा ब्रह्मा आदि देवताओं को एक-एक अंजलि चावल मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्र में गिरावे और नीचे लिखे उन-उन देवता का नाम पढ़ता जाये।

देव-तर्पण

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम् । ॐ रुद्र-स्तृप्यताम् । ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् । ॐ देवास्तृप्य-न्ताम् । ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् । ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् । ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् । ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ संवत्सराः सावयवास्तृप्यन्ताम् । ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् । ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् । ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् । ॐ नागास्तृप्यन्ताम् । ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् । ॐ पर्वता-स्तृप्यन्ताम् । ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् । ॐ मनुष्यास्तृप्य-न्ताम् । ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् । ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम् ।

ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् । ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् । ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् । ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् । ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूतग्रामाश्चतुर्विधास्तृप्यन्ताम् । ॐ सप्तर्षयस्तृप्यन्ताम् ।

ऋषितर्पण विधि

ऋषियों का तर्पण देवतर्पण के समान ही होता है। विशेष यह है कि ऋषियों को जौ युक्त जल से अंजलि दें। नीचे लिखे एक-एक महर्षि का नाम लेकर जल छोड़ते जायें :

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् । ॐ अत्रिस्तृप्यताम् । ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् । ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् । ॐ पुलहस्तृप्यताम् । ॐ क्रतुस्तृप्यताम् । ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् । ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् । ॐ भृगुस्तृप्यताम् । ॐ नारदस्तृप्यताम् ।

सनकादि तर्पण

अब जनेऊ को माला की तरह गले में धारण कर उत्तर की तरफ मुख करके जौ युक्त जल से सनकादि के नाम दो-दो अंजलि दें।

ॐ सनकस्तृप्यताम् । ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् । ॐ ॐ सनातनस्तृप्यताम् । ॐ कपिलस्तृप्यताम् । ॐ आसुरिस्तृप्यताम् । ॐ वोढुस्तृप्यताम् । ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ।

दिव्यपितृ-तर्पण

जनेऊ अपसव्य (अर्थात् जनेऊ बायें बाजू के नीचे और दायें कन्धे के ऊपर) करके बायें घुटने को जमीन पर टेककर, अंगूठे और उसके साथ की अँगुली से जल में तिल मिलाकर आगे लिखे एक-एक मन्त्र से तीन-तीन अञ्जलि पानी दक्षिण की ओर मुख करके दें और तर्पण वाली कुशा का मुंह भी दक्षिण दिशा की ओर करके अञ्जलि उस कुशा के मध्य में छोड़े और दायें हाथ में त्रिकुश की जगह मोटक ले लें।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ यमस्तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै

स्वधा नमः ३ । ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा नमः ३ । ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं तिलोदलं तेभ्यः स्वधा नमः ३ । ॐ वर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा नमः ३ ।

यम-तर्पण

यमतर्पण भी दिव्य तर्पण की तरह करें। इसमें तिलोदक की ३-३ अंजलि दें।

ॐ यमाय नमः । ॐ धर्मराजाय नमः । ॐ मृत्यवे नमः । ॐ अन्तकाय नमः । ॐ वैवस्वताय नमः । ॐ कालाय नमः । ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः । ॐ औदुम्बराय नमः । ॐ दध्नाय नमः । ॐ नीलाय नमः । ॐ परमेष्ठिने नमः । ॐ वृकोदराय नमः । ॐ चित्राय नमः । ॐ चित्रगुप्ताय नमः ।

मनुष्य-पितृ-तर्पण

नीचे लिखे मन्त्र से पितरों का आवाहन करें—

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्या सोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥

अर्थ—सोमपान करने योग्य अग्निष्वात्त आदि हमारे पितृगण देवताओं के साथ गमन करने योग्य मार्गों से यहां आयें

और इस यज्ञ में स्वधा से तृप्त होकर हमें (मानसिक) उपदेश दें और वे हमारी रक्षा करें।

इस प्रकार अपने पूर्वज पितरों का आवाहन करने के पश्चात् अपने पिता, दादा, परदादा आदि का नाम अमुक के स्थान पर लेते हुए नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करके पूर्वोक्त विधि से तीन-तीन अञ्जलि तिल सहित जल दें—

अमुकगोत्रः पिता अमुकनामा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः पितामहः अमुकनामा रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः प्रपितामहः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुकगोत्रः माताऽमुकी देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा पितामही अमुकीदेवी सावित्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा प्रपितामही अमुकी देवी सरस्वतीस्वरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः।

द्वितीयगोत्रे

अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहः वसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रोऽस्मत्प्रमातामहः रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रोऽस्मद्वृद्धप्रमातामहः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुकगोत्रास्मन्मातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्राऽस्मत्प्रमातामही अमुकीदेवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुक-गोत्रास्मद्-वृद्धप्रमातामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥

एवम् पितृव्य-मातुल-भ्रातृ-पितृभगिनी मातृभगिनी आत्मभगिनी श्वशुरगुरुशिष्याणामपि स्वस्वगोत्रोच्चा-रणपूर्वकं तर्पणं कार्यम्।

अर्थ—इसी तरह चाचा, मामा, भाई, पिता की बहिन, माता की बहिन, श्वसुर, गुरु और शिष्यादि के गोत्रादि का उच्चारण करके तर्पण करें।

येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः ॥१॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् ॥२॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षि-पितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥३॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥४॥

इन ऊपर के चार श्लोकों को पढ़कर तिलयुक्त जल की तीन अञ्जलि दे दें।

अर्थ—जो बन्धु नहीं हैं, या जो बन्धु हैं अथवा जो दूसरे

जन्मों में भाई-बन्धु हैं, जो हमसे तर्पण के जल की इच्छा रखते हैं, वे सब मेरे दिये गये जल से तृप्त हों ।।१।।

जो मेरे पूर्वज पुत्र और पत्नी से रहित थे अतः जिन के वंश में जल और पिंड देने वाला कोई नहीं है उन्हें दिया गया यह मेरा तिलयुक्त जल अक्षय हो, प्राप्त हो ।।२।।

ब्रह्मा से लेकर कीटों तक जितने जीव हैं वे, तथा देवता, ऋषि, पितर और मनुष्य तथा माता,मातामह (नाना) आदि सब पितर मेरे इस दिये गये तिलयुक्त जल से तृप्त हों ।।३।।

मेरे कुल की बीती हुई करोड़ों पीढ़ियों में उत्पन्न हुए जो-जो पितर ब्रह्मलोक पर्यन्त सात द्वीपों में कहीं भी निवास करते हों उनकी तृप्ति के लिए मेरा दिया हुआ यह तिल मिश्रित जल उन्हें प्राप्त हो ।।४।।

वक्तव्य—पहले एक जगह हमने लिखा था कि जिन धोती और अंगोछे से स्नान किया हो उसे न निचोड़ें। अब उन धोती और अंगोछे को पानी में डुबोकर या भिगोकर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर भूमि पर निचोड़ दें और कुशा का पवित्रक भी त्याग दें।

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ।।

अर्थ—जो भी पूर्वज हमारे वंश में पैदा हुए और पुत्रहीन ही मर गये वे सब मेरे दिये इस वस्त्र के निचोड़े हुए जल को ग्रहण करें।

भीष्म-तर्पण

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से तिलमिश्रित जल से भीष्म को तीन अञ्जलि जल दें।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् ।।१।।

वसूनामवताराय शान्तनोरात्मजाय च ।
अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबाल्यब्रह्मचारिणे ॥२॥

अर्थ—शान्तनु का पुत्र, वीर, सत्यवादी और जितेन्द्रिय भीष्म हमारे दिये इस जल को प्राप्त करें और निःसन्तान होते हुए भी पुत्र-पौत्रों से होने वाली उचित जल-तर्पण आदि क्रिया को ग्रहण करें ॥१॥

वसुओं के अवतार, शान्तनु के पुत्र आबाल ब्रह्मचारी भीष्म-पितामह को मैं यह तिलमिश्रित जल का अर्घ्यं देता हूँ ॥२॥

सूर्य को अर्घ्य

भीष्म के तर्पण के पश्चात् जनेऊ को सव्य (बायें कन्धे पर और दायें बाजू के नीचे) करके पुष्प मिश्रित जल सूय को दें और यह मन्त्र पढ़ें—

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकंपय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

अर्थ—हे हजारों किरणों वाले, तेजःपुंज, जगत् के स्वामी सूर्यदेव ! आओ, मुझ पर कृपा करो और हे दिनकर देव ! भक्ति से दिये गये मेरे इस पुष्पयुक्त अर्घ्यं जल को ग्रहण करो ।

सूर्यं को अर्घ्य देने के बाद सूर्य और पितरों को प्रणाम करके खड़े होकर तीन प्रदक्षिणा करे और यह मन्त्र पढ़े—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे ॥

अर्थ—जो कोई पाप इस जन्म में या दूसरे जन्म में हुए हों वे सब प्रदक्षिणा के पग-पग पर नष्ट हो जाते हैं ।

देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥

अर्थ—अग्नि देवता, वायु देवता, सूर्य देवता, चन्द्र देवता, वसु देवता, रुद्र देवता, आदित्य देवता, मरुदंगण देवता, विश्वेदेव देवता, बृहस्पति देवता, इन्द्र देवता और वरुण देवता सभी ईश्वर के ही रूप हैं, मैं इन सबको वेद रूप में जानता हुआ नमस्कार करता हूँ।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि । सुशान्तिर्भवतु ॥

अर्थ—द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वीलोक, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वेदेव, ब्रह्म-देव या परब्रह्म सभी शान्तिरूप हैं, शान्ति तो शान्तिरूप है ही। वह शान्ति मुझे प्राप्त हो। सर्वत्र सुन्दर शान्ति का निवास हो।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥

अर्थ—हे सर्वव्यापक भगवन् और सूर्यदेव ! सब पापों और बुराइयों को हमसे दूर करो और जो कल्याणकारी हो उसे हमें प्रदान करो।

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः । यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ।

अर्थ--जिन बुद्धियों के द्वारा स्तुति की जाती है उनको हम बलवान्, जटामुकुटधारी, वीरों के आश्रयभूत रुद्र के लिये प्रेरित करते हैं जिससे हमारे दुपाये मनुष्यों और चौपाये पशुओं की रोगशान्ति हो और हमारे इस गांव में सभी प्राणी रोग रहित तथा हृष्ट-पुष्ट हों।

ॐ एतन्ते देवसवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव।

अर्थ--हे देव! ऋषिगण इस यज्ञ को सविता देवता का यज्ञ कहते हैं, जो बड़ों के स्वामी ब्रह्मा के लिए किया गया है। इसके द्वारा यज्ञ की, यज्ञ के द्वारा यज्ञपति यजमान की और यज्ञपति यजमान के द्वारा मेरी रक्षा करना।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु।

अर्थ—'मन' घृत के अपने अंश का सेवन करे (अन्न का सूक्ष्मतम अंश से 'मन' बनता है)। बृहस्पति देव इस यज्ञ का विस्तार करें और इस यज्ञ को निर्विघ्न रूप से सम्पन्न करें।

ॐ विश्वेदेवास इह मादयन्तमों ३ प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति।

अर्थ—विश्वदेव इस यज्ञ में प्रसन्न हों। हे यजमान, तू प्रतिष्ठा प्राप्त कर। यह प्रतिष्ठा नामक यज्ञ है जहां इस यज्ञ द्वारा देवपूजा तथा देवपूजादि शुभ कार्य होते हैं वहां सब कुछ प्रतिष्ठित होता है।

ॐ

गणपतिपूजनम्

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे, निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥

अर्थ—हम तुझ गणों के मध्य में से गणपति का आवाहन करते हैं और निधियों के मध्य में से निधिपति का आवाहन करते हैं। हे मेरे निवासदाता, मैं जगत्सृष्टि के लिए प्रकृति में गर्भाधान करने वाले ईश्वर को जानूं और तुम भी प्रकृति में गर्भाधान करने वाले ईश्वर को प्राप्त करो।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

अर्थ—गणों को नमस्कार, गणपतियों को नमस्कार, गणविशेषों को नमस्कार, गणविशेषों के स्वामियों को नमस्कार, बुद्धिमानों को नमस्कार, बुद्धिमानों के अधिष्ठाताओं को नमस्कार निकृष्ट रूप वालों को या नानारूप वालों को नमस्कार और सर्वरूप वालों को मेरा नमस्कार हो।

ॐ सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।

श्री गणपतये नमः । पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानानीयम्, गन्धं, अक्षतं, पुष्पाणि समर्पयामि, धूपम् आघ्रापयामि, दीपं प्रदर्शयामि, नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यान्ते जलं समर्पयामि, दक्षिणां समर्पयामि । नमस्करोमि ।

अर्थ—गणेश जी का नाम और स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं—वे गणेश सुन्दर मुख वाले, एक दांत वाले, कपिल वर्ण, हाथी के कानों वाले, लंबे पेट वाले, विचित्र, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणों के स्वामी, मस्तक में चन्द्रमा को धारण किए हुए, हाथी के मुख वाले हैं—जो व्यक्ति गणेश जी के इन १२ नामों को पढ़ता या सुनता है और विद्यारम्भकाल में, विवाह के समय, गृह आदि में प्रवेश करते समय अथवा बाहर जाते हुए, युद्ध में और संकट के समय जो उक्त नामों का उच्चारण करता है, उसे उस कार्य में कोई विघ्न नहीं आता ।

ओंकार-पूजा

ओंकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ।।

ॐकाराय नमः । पाद्यादि से पूजन करें ।

अर्थ—ओंकार का वर्णन करत हुए कहते हैं—योगी लोग उस बिन्दु युक्त ओंकार का नित्य ध्यान करते हैं । वह ॐकार इच्छाओं को पूर्ण करने वाला और मोक्ष देने वाला है । हम उस ओंकार को बार-बार नमस्कार करते हैं ।

लक्ष्मीपूजा ।। श्रीः ।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।।

श्रियै नमः । पाद्यादि से पूजन करें ।

अर्थ—श्री और लक्ष्मी दोनों तेरी पत्नियाँ हैं, दिन रात तेरे पसवाड़े हैं, नक्षत्र तेरा रूप है और अश्विनीकुमार तेरी जँभाई हैं। तुम मेरे लिए इस लोक की इच्छा करो, मेरे लिए उस लोक की इच्छा करो, मेरे लिए सब लोकों की इच्छा करो। अर्थात् मैं उन तीनों लोकों वा अधिकारी बनूं, मेरे सब लोक ठीक हों।

वास्तुपूजा

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

अर्थ—सर्पों को नमस्कार हो—जो सर्प पृथ्वी में हैं, जो अन्तरिक्ष में हैं और जो द्युलोक में वास्तुदेवता (निवास-स्थानों के देवता) के रूप में स्थित हैं उन सब सर्पों को नमस्कार हो।

इस मंत्र से सर्प का पूजन करके दायें हाथ में मौली बांधें। यदि पुरोहित पूजा करा रहा हो तो वह यजमान के हाथ में मौली बांधे और यजमान भी पुरोहित के हाथ में मौली बाँधे।

पुरोहित के हाथ में मौली बांधने का मन्त्र

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

अर्थ—ईश्वरभक्त व्यक्ति व्रत से दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा और दक्षिणा से श्रद्धा को प्राप्त करता है। श्रद्धा से सत्य प्राप्त किया जाता है।

यजमान के हाथ में मौली बाँधने का मन्त्र

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

अर्थ—जिस सत्य से दानवों का राजा महाबलशाली बली बाँधा गया, उसी सत्य से मैं तुझे (यजमान को) बाँधता हूँ। रक्षाबन्धन, तुम विचलित मत होना, तुम विचलित मत होना और इसकी रक्षा करना।

सूर्यादि ग्रहों की संक्षिप्त पूजा—

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,
सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु ॥

सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः । पाद्यादि से पूजन करें ।

अर्थ—ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु—ये सभी देव और ग्रह शान्तिकारक हों।

यदि प्रत्येक ग्रह का पूजन पृथक्-पृथक् करना हो तो आगे दिये गये मन्त्रा से पूजन करें—

ब्रह्मा विष्णु, महेश और नवग्रहों का विशिष्ट पूजन

ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । सबुध्न्या उपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि ।

अर्थ ब्रह्मरूप सुन्दर आदित्य सर्वप्रथम पूर्व दिशा में यजमान रूप में प्रकट होता है फिर मर्यादा से वह रुचिर लोकों को

प्रकाशित करता है। इस जगत् की आधारभूता और प्राणियों की आश्रयभूता दिशाओं को भी वही प्रकाशित करता है। यह सूर्य ही मूर्त और अमूर्त का जन्मदाता है, अतः ब्रह्मा है।

ओम् इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाँसुरे॥ ओम् भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि ।

अर्थ—इस जगत् में विष्णु ने चरणविन्यास किया। भूमिलोक, अन्तरिक्ष लोक और द्युलोक—तीनों में उसने चरण रखा। विष्णु का एक चरण धूलि के ढेर जैसे अज्ञात प्रदेश में छिपा हुआ है।

ओम् नमः शम्भवाय च मयोभुवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च ॥ओम् भूर्भुवः स्वः शङ्कराय नमः, शङ्करमावाहयामि ।

अर्थ—इहलोक और परलोक सुख के उद्‌गम 'शम्भव' को नमस्कार, मोक्ष सुख के उद्‌गम मयोभव को नमस्कार। लोकसुख करने वाले शंकर को नमस्कार, मोक्ष सुख को करने वाले मयस्कर को नमस्कार। कल्याण रूप शिव को नमस्कार, भक्तों के लिये अधिकल्याणरूप शिवतर को नमस्कार।

ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि ।

अर्थ—सूर्यदेव कृष्णवर्ण के लोक (अन्तरिक्ष लोक) से बार-बार आते हुए देवों को तथा मनुष्यों को अपने-अपने लोकों में

अवस्थापित करते हुए और सब लोकों को देखते हुए सुवर्णमय रथ से हमारे समीप आते हैं।

ओम् इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमम-मुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा॥ ओम् भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः, चन्द्रमावाहयामि।

अर्थ—हे सूर्यादि देवताओ, बड़े क्षत्रतेज के लिए, बड़े बड़प्पन के लिए बड़े जनतन्त्र राज्य के लिए और इन्द्र के सामर्थ्य के लिए इस यजमान को प्रेरित करो। इस अमुक (यजमान के पिता का नाम) के पुत्र को, इस अमुकी (यजमान की माता का नाम) के पुत्र को इस प्रजा के स्वामी को आप सब प्रेरित करें। यह तुम्हारा राजा हो। हम ब्राह्मणों का राजा तो सोम ही है।

ओम् अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँरेतां ँसि जिन्वति॥ ओम् भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौममावाहयामि।

अर्थ—जो अग्नि दिन में सूर्य रूप से द्युलोक का मूर्धा या मस्तक है यही महान् है, यही अग्नि रूप से पृथ्वीलोक का स्वामी है। यही द्युलोक से वरसने वाले जल के कारणों को तृप्त या पुष्ट करता है।

(इस मन्त्र में द्युलोक का मूर्धा, ऊर्ध्व दिशा का स्वामी और पृथ्वी का पुत्र आदि अर्थों की प्रतीति भौम या मंगल का स्मरण कराती है)।

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। ओम् भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः, बुधमावाहयामि।

अर्थ—हे अग्निदेव, तुम जल उठो, जाग उठो, यह यजमान हमारे (इष्टदेव हित के कार्यों) और आपूर्त (प्रजाहित के कार्यों) में सहयोगी हो। इस सहस्थान रूप पृथ्वीलोक में और उस सर्वोत्कृष्ट सूर्यलोक में सब देवता और यजमान बैठें। यहाँ प्राणत्याग के बाद यजमान की देवताओं के साथ सालोक्य की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गई है। इस मन्त्र में 'बुध' की श्रुति से बुध का स्मरण हो आता है।

ओम् बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ओम् भुर्भुवः स्वः बृहस्पतिमावाहयामि।

अर्थ—हे बृहस्पति देव, हे ऋत (सत्य) के जन्मदाता, जिस प्रकाशयुक्त और यज्ञादि कार्यों में प्रयुक्त धन से धनस्वामी सामान्य जनों में योग्य समझे जाने वाले पुरुष से अधिक सुशोभित होता है, बल से प्रकाशमान उस विचित्र धन को आप हम लोगों में स्थापित करें। हमें ऐसे पवित्र और विचित्र (ज्ञान) धन से युक्त कर दें। इस मन्त्र में बृहस्पति के सम्बोधन से बृहस्पति का स्मरण हो आता है।

ओम् अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं

विपान ॐ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः । शुक्रमावाहयामि ।

अर्थ—हविरूप अन्न से प्रकट हुए प्रजापति ने वेदमन्त्र द्वारा रस का विवेकपूर्वक पान किया; क्षत्रतेज, दूध और सोम का पान किया। सत्य से प्राप्त सत्य रूप सामर्थ्य, विशुद्ध सोमपान और अन्न से शुक्र उत्पन्न हों, इन्द्र का इन्द्रियभूत यह जल दूध, अमृत और मधु के समान गुणकारी हो। यहाँ शुक्रश्रुति से शुक्र ग्रह का स्मरण है।

ओम् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः शनैश्चरराय नमः । शनैश्चरमावाहयामि ।

अर्थ—देवतारूप जल हमारे लिए पापनिवारणपूर्वक सुखकारी हों। वे देवपूजादि यज्ञ के लिये और पीने के लिए हों। वे उत्पन्न रोगों की शान्ति और अनुत्पन्न रोगों से मुक्ति के लिए तथा हमारी शुद्धि के लिये हमें सींचें। यहां पर भी 'शन्' श्रुति से शनैश्चर का संकेत मिलता है।

ओम् कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः राहवे नमः । राहुमावाहयामि ।

अर्थ—सदा बढ़ता हुआ, पूजनीय सखा किस तृप्तिकर उपाय द्वारा हमारे अनुकूल हो। बुद्धियुक्त किस व्यवहार से वह हमारे अनुकूल हो। यहाँ अनुकूल होने की प्रार्थना से प्रतिकूल रहने वाले राहुग्रह का स्मरण हो आता है।

ओम् केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे ।

समुषाद्भिरजायथाः ।। ओम् भूर्भुवः स्वः केतवे नमः, केतुमावाहयामि ।

अर्थ—हे प्रतिदिन अस्त होने के कारण विलयशील सूर्य, तुम रात्रि में प्रज्ञानरहित प्राणियों को प्रातः ज्ञान देने के लिये और रूपरहित पदार्थों का रूप प्रकाशित करने के लिये अपनी किरणों के साथ प्रतिदिन उत्पन्न (उदय) होते हो । यहां 'केतु' शब्द से केतु का स्मरण हो आता है ।

इस प्रकार नवग्रहों का पूजन करके कलश स्थान करें तथा कलश में वरुण का पूजन करें ।

वरुणदेवता (कलश) पूजन

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी-स्थो वरुणस्य सदन्यसि, वरुणस्य ऋतसदनमसि, वरुणस्य ऋतसदनमासीद ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि ।

अर्थ—हे कलश के देव ! तुम गाड़ी के नहीं अपितु वरुण के जुए को ऊंचा उठाने वाले काष्ठ हो, तुम वरुण की सत्यसदनी (सत्यमयी कुर्सी) हो । तुम उस सत्यसदनी के रखने के स्थान सत्यसदन हो । वरुण के उस सदन पर बैठो ।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समास्थितः ।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।।

अर्थ—कलश के मुख पर विष्णु का वास है । कण्ठ में शिव रहते हैं, कलश के मध्य में सात समुद्र और सात द्वीपों वाली पृथ्वी का वास है ।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।

अंगैस्तु सहिता नित्यं कलशं तु समाश्रिता: ।।
देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ।।

पाद्य अर्घ्य आदि से वरुण और कलश का पूजन करें ।

अर्थ—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—ये सभी अङ्गों सहित नित्य कलश में निवास करते हैं । हे कुम्भ ! तुम देवताओं और दैत्यों के संवाद के समय मथे जा रहे समुद्र से उत्पन्न हुए और स्वयं भगवान् विष्णु ने तुम्हें धारण किया था ।

अथ नित्यहोमविधि

आचमन और प्राणायाम करके पूरा संकल्प करें ।

ॐ तत्सदद्य पुण्यतिथौ सपरिवारस्य मम आत्मनः सर्वदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं दैनिकहोममहं करिष्ये ।

अग्नि-पूजन

निम्नलिखित मन्त्रों से अग्निदेव का ध्यान और पूजन करें—

ॐ चत्वारि शृंगास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यान् आविवेश ।।

अर्थ—यज्ञ के (ब्रह्मा, उद्गाता, होता और अध्वर्यु—ये) चार सींग हैं । (ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद—ये) तीन पैर हैं । (हविर्धान और प्रवर्ग्य—ये) दो सिर हैं और (सात होता या सात छन्द) सात हाथ हैं । कामनाओं की वर्षा करने वाला

(पूर्ति करने वाला) यह महान् देव तीन स्थानों (प्रातः सवन, मध्यन्दिन सवन और सायं सवन) में बँधा हुआ शब्द करता है और प्राणियों के अन्दर जठरानल रूप में प्रविष्ट है।

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।
पितृ्णां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने ॥

अर्थ—जो अग्नि सब देवताओं का मुख रूप होकर देवताओं की हव्य आहुति और पितरों के लिए दी गई कव्य आहुति को ग्रहण करने वाला है। हम आप अग्निस्वरूप विष्णुदेव को प्रणाम करते हैं।

भो अग्ने ! शांडिल्यगोत्र मेषध्वज मम संमुखो भव। हविर्गृहाण, देवेभ्यः संगच्छ ॥

अर्थ—हे शांडिल्यगोत्र और मेषध्वजा वाले अग्निदेव ! मेरे सामने आइए, मेरी आहुति को ग्रहण कीजिए और इसे देवताओं को पहुंचाइए।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि वर्हिषि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि।

अर्थ—हे अग्निदेव ! हमारे द्वारा प्रस्तुत होकर आप विविध गतियों के लिए और देवताओं को हव्य पहुंचाने के लिए पधारें तथा होता के रूप में विराजें।

ऊपर दिये गये इन मन्त्रों का उच्चारण कर पाद्य अर्घ्य आदि से अग्नि का संक्षिप्त पूजन करें।

हवन-विधि

वायें हाथ में उपयमन कुश (गुदी हुई कुशा) लेकर किसी

शुद्ध स्थान से चिमटे आदि से अग्नि लाकर पूर्व की ओर मुख करके अग्नि को कुण्ड में स्थापित करें अथवा समिधा धर के देवदारु को दियासलाई से जलाकर जलती हुई अग्नि को कुण्ड में स्थापित कर दें।

अब विलस्त भर की तीन समिधाओं को घी में डुबोकर नीचे लिखे मन्त्रों से एक-एक करके अग्नि में चढ़ावें और प्रार्थना करें—

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे, यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्च-स्व्यन्नादो भूयास ँ स्वाहा।

अर्थ—मैं प्रत्येक उत्पन्न वस्तु को जानने वाले महान् अग्नि के लिए समिधा (यज्ञ काष्ठ) लाया हूँ। हे अग्निदेव ! जैसे तुम समिधा से बढ़ते हो ऐसे ही मैं भी आयु से, बुद्धि से, तेज से, पशुओं से और ब्रह्मतेज से बढ़ूं। मेरे आचार्य का पुत्र (अथवा शिष्य) जीवित रहे। मैं किसी का अपमान न करने वाला बन-कर मेधावी बनूं। यशस्वी, तेजस्वी और ब्रह्मवर्चस्वी तथा (भक्ष्य) अन्न के खाने वाला होऊँ।

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति। सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।

अर्थ—हे अग्निदेव ! आपके लिए ये सात समिधाएँ हैं। क्योंकि आपकी सात जिह्वाएँ हैं, फिर सात ऋषि आपके याजक

हैं। सात ही आपके प्रिय धाम हैं, सात होत्र हैं, सात ही प्रकार से आपका यजन किया जाता है, सातों योनियों या चितियों को आप पूर्ण करते हैं। घृत के द्वारा यह हवि आपके लिए सुहुत (भली प्रकार अर्पित) हो।

ॐ समिद्धो अद्य मनुषो दुरेणो देवो देवान् यजसि जातवेदा:। आचक्ष्व मित्र महश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।

अर्थ—हे अग्निदेव ! आज (यज्ञ करने के दिन) यजमान के घर में आप दानादिगुण युक्त होकर समिद्ध हैं, बढ़े हुए हैं और दानादिगुण युक्त होकर देवताओं का यजन कर रहे हैं। आप उन देवों का आवाहन करें और यजन करें। हे मित्रों के पूजक ! आप चेतनावान् हैं, आप मेरे यज्ञ में देवताओं के दूत, क्रान्तदर्शी और प्रकृष्ट चित्त वाले हैं।

अग्नि में, घी में डूबी हुई तीन समिधाएँ डालने के बाद बैठकर दाहिने हाथ से ईशान कोण से उत्तर पर्यन्त अग्नि के प्रदक्षिण क्रम से सब ओर जल सिंचन करें।

अब दक्षिण दिशा की ओर कुशा का ब्रह्मा स्थापित करें। फिर ब्रह्मा से अग्नि तक कुण्ड से दक्षिण में पूर्वाग्र, पश्चिम में उत्तराग्र और उत्तर में पूर्वाग्र कुशा बिछाकर निम्नलिखित मंत्रों से नित्य प्रातः होम करें। हर एक आहुति देते समय वाम हाथ में उपयमन कुश लिये रहें।

स्रुवा या चम्मच को किसी कुशा से साफ करके घी की आहुति डालें और हर एक आहुति के अन्त में दो-एक बूंदें घी बाईं ओर रखे प्रोक्षणी पात्र (जल के पात्र) में छोड़ते जायें।

आहुतियाँ—

(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये, न मम।

यह आहुति मन में बोलकर दी जाती है। नीचे के शेष मंत्र उच्चारणपूर्वक जोर से बोले जा सकते हैं।

(२) ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिंद्राय, न मम।

(३) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये, न मम।

(४) ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय, न मम।

(५) ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये, न मम।

(६) ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे, न मम।

(७) ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय, न मम।

(८) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदमग्निवायुसूर्येभ्यो न मम।

(९) ॐ देवकृतस्यैनसो ऽवयनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम।

अर्थ—देवताओं के प्रति किये गये अपराध या पाप के आप नाशक हैं।

ॐ मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम।

अर्थ—मनुष्यों के प्रति किये गये अपराध या पाप के आप नाशक हैं।

ॐ पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम।

अर्थ—पितरों के प्रति किये गये अपराध या पाप के आप नाशक हैं।

ॐआत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये

न मम ।

अर्थ—आत्मा या अपने प्रति किये गये अपराध या पाप के आप नाशक हैं।

ॐ एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इदमग्नये न मम ।

अर्थ—पाप के पाप के भी अर्थात् समस्त पापों के आप नाशक हैं।

ॐ यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार, यच्चाविद्वांस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । इदमग्नये न मम ।

अर्थ—जो अपराध या पाप मैंने जानते-बूझते हुए किये हैं और जो अनजाने में किये हैं उन सम्पूर्ण अपराधों या पापों के आप नाशक हैं।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवया सिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम ।

अर्थ—हे अग्निदेव, आप सब पुरुषार्थों के साधन का उपाय जानने वाले विद्वान् हैं, आप हम पर से वरुणदेव के क्रोध को दूर कर दें। फिर आप यज्ञ करने वालों में और देवताओं के पास हवि पहुंचाने वालों में श्रेष्ठ हैं। अत्यन्त देदीप्यमान हैं, चमकीले हैं, हमसे सब दुर्भाग्यों को आप दूर कर दें।

ॐ सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि

मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा ।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम ।।

अर्थ—हे अग्निदेव, ऐसे आप रक्षा के निमित्त से हमारे निकटवर्ती होकर उषा के खुलने के समय अग्निहोत्र आदि कर्मों की सिद्धि के लिये भी समीपवर्ती रहें। आप हमारे शरीर में वरुण के द्वारा किये गये जलोदर आदि रोगों का नाश करें। हमारी दी हुई हवि में रमण करते हुए आप इस सुखकर हवि को भक्षण करें। आप सदा हमारे शुभ आवाहनों से युक्त हों।

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा। इदमग्नये न मम।

अर्थ—हे अग्निदेव, आप भक्तों के समीपगामी हैं, उनकी स्तुति या कीर्ति के पालक हैं, सचमुच आप उनके समीपगामी या समीपवर्ती हैं। हमारे समीपवर्ती होकर यज्ञ में दी गई हवि को देवताओं को प्राप्त कराते हैं। आप हमारे समीपवर्ती होकर हमें उचित औषध प्रदान करें।

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।

अर्थ—हे वरुणदेव जो आपके सैकड़ों, हजारों यज्ञ सम्बन्धी बड़े-बड़े पाश (बन्धन) फैले हुए हैं उनसे आज हमें सविता देव, विष्णुदेव, विश्वेदेव और मरुद्गण सभी स्वर्गस्थित देवता मुक्त करें।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमविमध्यम ँ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा, इदं वरुणाय न मम ।।

अर्थ—हे वरुणदेव, हमसे उत्तम पाश को उठा लो, हमसे अधम पाश को उतार लो और हमसे मध्यम पाश को खोल लो। हे आदित्य देव, अबसे हम तुम्हारे व्रत में निरपराध हों और अदीन हों।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा इदं सवित्रे न मम ।।

विशेष वक्तव्य—ऊपर कही आहुतियों से भिन्न कोई विष्णु-भक्त अधिक हवन करना चाहे तो पुरुषसूक्त से हवन करे और शिवभक्त रुद्रसूक्त से हवन करे तथा देवीभक्त श्रीसूक्त से हवन करे। ये तीनों सूक्त पृथक् दिये गये हैं।

केवल महामृत्युञ्जय मन्त्र से आयुवृद्धि के लिए चरु में बिल्व पत्र डालकर महामृत्युञ्जय मन्त्र से भी यज्ञ किया जाता है।

इसके अतिरिक्त गायत्री मंत्र से जितना चाहे (१०/१००/१०००) बार आहुतियाँ डालकर यज्ञ कर सकते हैं।

अब नीचे लिखे मन्त्र से, चारों ओर रखी कुशाओं को चुन-कर और घी में भिगोकर अग्नि में डाल दें—

ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा, इदं वाताय न मम।

अर्थ—हे यज्ञवेत्ता देवताओ! आप लोग हमारे इस यज्ञ

को समाप्त जानकर अपने गन्तव्य मार्ग जो पधारें। हे चित्त के प्रवर्तक परमेश्वर ! मैं इस यज्ञ को आपके अर्पण करता हूँ, आप इसे वायुदेवता में स्थापित करें।

पूर्णाहुति मन्त्र

ओं पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत, वस्नेव विक्रीणावहा। इषमूर्ज ँ शतक्रतो स्वाहा॥१॥

अर्थ--हे दर्वि (कड़छी या स्रुव) इस पतीले में से घृत या अन्न लेकर पूर्ण होकर तू इन्द्रके प्रति जा। फिर कर्मफल से भली भांति पूर्ण होकर आ। हे इन्द्रदेव ! अध्वर्यु और यजमान— हम दोनों मूल्य द्वारा इस अन्न और घृत को वितरित करते रहे हैं।

ओं मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामा-सन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥२॥

अर्थ—इसे ही द्युलोक का मूर्धा या मस्तक और अन्तरिक्ष-लोक की पर्याप्त मति कहते हैं और इस वैश्वानर को ही अरणियों से उत्पन्न होने पर अरणि कहते हैं। जिसको क्रान्तदर्शी कवि, ऐश्वर्ययुक्त सम्राट् और जनों का अतिथि कहते हैं। इसीलिए अतिथि के लिए जल लाते हैं और जिसे देवताओं ने अपना (पात्र) पीने का साधन मुख बनाया है।

ऊपर दिये गये पूर्णाहुति के दो मन्त्रों से शेष सारा चरु और घी अग्नि में डाल दें।

अब नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए अग्नि की तीन बार परिक्रमा करें।

ओं ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषंगिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजने व धन्वानि तन्मसि॥

अर्थ—जो रुद्र हाथ में अस्त्र धारण किये कमर में तरकस (म्यान) बाँधे प्रयाग आदि तीर्थों पर धर्म-रक्षा के लिए विचरण करते हैं। सहस्र योजनों वाले मार्ग पर स्थित उन रुद्रों को इस हवि द्वारा हम रक्षाधनुष प्रदान करते हैं।

हवनकर्ता स्रुवे से या चम्मच से भस्म अग्नि में से उठा ले और नीचे लिखे मन्त्रों से उन उन अंगों पर उसे लगाये।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—इति ललाटे (मस्तक पर)

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—इति ग्रीवायाम् (गर्दन पर)।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिणकर्णमूले (दाहिने कान पर)।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदये (हृदय पर)।

अर्थ—जो बचपन, जवानी और बुढ़ापा—तीन आयुओं) अवस्थाओं का समाहार (सम्मिलित स्वरूप) जमदग्नि को प्राप्त था, जो तीन अवस्थाओं का समाहार कश्यप को प्राप्त था, जो तीन अवस्थाओं का समाहार देवताओं को प्राप्त है वह तीन आयुओं का समाहार हमें प्राप्त हो।

सूर्य-अर्घ्यमन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर सूर्य को अर्घ्य (जल) दें।

अर्थ—पहले दिया जा चुका है।

परिक्रमा-मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे-पदे॥

इस मन्त्र को पढ़कर पुनः यज्ञमण्डप की परिक्रमा करें।

अर्थ—पहले दिया जा चुका है।

विसर्जन-मन्त्र

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च॥

पूजा के स्थान पर अक्षत डालकर सभी ग्रहों और देवताओं को नमस्कार करके विसर्जन कर दें।

अर्थ—सभी देवता मेरी पूजा को ग्रहण करके यजमान के लाभ के लिए, फिर आने के लिए अब अपने निवास-स्थान की ओर पधारें।

इति नित्यहोमविधिः।

ॐ

मृत्युञ्जय-मन्त्र

विनियोगः

ॐ त्र्यम्बकम् इति मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः रुद्रो देवता, आयुर्वृद्धये विनियोगः ।

विधि—विनियोग करके नीचे के मृत्युञ्जय मन्त्र अथवा महामृत्युञ्जय मन्त्र का एक माला या अधिक यथाशक्ति जाप करें।

मृत्युञ्जय-मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे, सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

अर्थ—ॐ तीन नेत्र वाले भगवान् शंकर का हम पूजन करते हैं—जो सुगन्ध और पुष्टि को बढ़ाने वाले हैं—जैसे खरबूजा बेल से छूटकर मुक्त हो जाता है, वैसे ही आप भी मुझे मृत्यु से मुक्त करें। और उद्धार करें।

महामृत्युञ्जय-मन्त्र

ॐ हौं जूं सः, भूर्भुवः स्वः, त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । भूर्भुवः स्वः सः जूं हौं ओं ।।

अर्थ—हौं जूं सः और भूः भुवः स्वः—इन नामों वाले भगवान् शंकर का हम पूजन करते हैं जो सुगन्ध और पुष्टि के बढ़ाने वाले हैं। जैसे ककड़ी या खरबूजा बेल से टूटकर फिर बेल में नहीं लगता, वह मुक्त हो जाता है ऐसे ही हे भगवन् ! आप मुझे मृत्यु से (अथवा मृत्युकारक रोगों से) छुड़ायें। और उद्धार करें।

बलिवैश्वदेव विधि

प्रत्येक गृहस्थ के लिए पाँच महायज्ञ करना उचित है। वे ये हैं—१. ब्रह्मयज्ञ, २. देवयज्ञ, ३. भूतयज्ञ, ४. पितृयज्ञ, ५. मनुष्य-यज्ञ। इनमें से पहले ब्रह्मयज्ञ को छोड़कर शेष चार देवयज्ञ आदि बलि वैश्वदेव कर्म में आ जाते हैं। अब यहाँ क्रम से सभी यज्ञों की विधि का वर्णन किया जाता है।

१. ब्रह्मयज्ञ

वेदों का स्वाध्याय करने से ब्रह्मयज्ञ सम्पन्न हो जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन वेद उपनिषद् आदि के मन्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए। गायत्री मन्त्र के यथाशक्ति जाप से भी ब्रह्मयज्ञ की पूर्ति हो जाती है।

स्वाध्याय-मन्त्राः

मनःशुद्धीकरण मन्त्र

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव-संकल्पमस्तु ॥१॥

अर्थ—हमारा दिव्य मन जैसे जागृत अवस्था में बहुत दूर चला जाता है वैसे ही वह स्वप्नावस्था में भी दूर चला जाता है। वह ज्योतियों में उत्तम ज्योतिस्वरूप दूरगामी मेरा मन कल्याणकारी शुभ विचारों वाला हो।

ॐ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२॥

अर्थ--कर्मशील, मनस्वी (बुद्धिमान) और धीर लोग यज्ञ में (अथवा संसार में) जिस मन के द्वारा कामों को पूर्ण करते

हैं और जो सभी जीवों के हृदय में स्थित होकर देवपूजा और ज्ञानचर्चा में अपूर्व शक्ति रखने वाला है वह मेरा मन उत्तम विचारों वाला हो जाये।

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥३॥

अर्थ—जो मन ज्ञानमय और चैतन्य को अनुभव करने वाला (चेतना रूप) है और सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में ज्योतिस्वरूप तथा अमृतरूप है (अमर है)। जिसके बिना मनुष्य कुछ भी काम नहीं कर सकते, वह मेरा मन कल्याणमय विचारों वाला हो।

ॐ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥४॥

अर्थ—जिस अमर मन ने भूत, भविष्यत् और वर्तमान में होने वाली सभी बातों को अपने अन्दर सँजो रखा है। जिसने सात होताओं वाले यज्ञ को फैला रखा है) अर्थात् जिसके द्वारा यज्ञों में प्रवृत्ति होती है। वह मेरा मन कल्याणमय विचारों वाला बने।

ॐ यस्मिन्नृचः सामयजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥५॥

अर्थ—जिस मन के मन्दिर में ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद ऐसे सूक्ष्म रूप से जमे हुए हैं (विद्यमान हैं) जैसे रथ की नाभि

(मध्य भाग) के चारों ओर 'अर' (पहिये में लगी चारों ओर की लकड़ियां-डंडे) मजबूती से फँसे होते हैं। जीवों के जिस मन में चेतन रूप सम्पूर्ण ज्ञान ओतप्रोत है, ऐसा मेरा मन कल्याणकारी विचारों वाला हो।

ॐ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेमीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥६॥

अर्थ—जैसे योग्य सारथी अत्यन्त वेगवान् घोड़ों को भी उनकी लगाम के द्वारा सीधे मार्ग पर चलाता है, इसी तरह मन भी सम्पूर्ण प्राणियों को उनकी इन्द्रियरूपी लगामों के द्वारा सीधे मार्ग पर चलाता है। यह अत्यन्त वेगवान् और हृदय प्रदेश में स्थित हुआ मेरा मन कल्याणकारी विचारों वाला बने।

शान्तिपाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

अर्थ—वह सच्चिदानन्द परब्रह्म पुरुषोत्तम सब प्रकार से सदा-सर्वदा परिपूर्ण है। वह जगत् भी उस परब्रह्म की पूर्णता से पूर्ण है, इसलिये भी वह परिपूर्ण है। उस पूर्ण ब्रह्म में से पूर्ण को निकाल लेने पर भी वह पूर्ण ही बच रहता है।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।

अर्थ—हे परमात्मन्! आप, हम गुरु-शिष्य दोनों की साथ-साथ सब प्रकार से रक्षा करें, आप दोनों का साथ-साथ समुचित रूप से पालन-पोषण करें, हम दोनों साथ ही साथ सब प्रकार से बल प्राप्त करें, हम दोनों की अध्ययन की हुई विद्या तेजपूर्ण

हो और हमारे अन्दर परस्पर द्वेष न हो।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

अर्थ—हे देवगण ! हम अपने कानों से शुभ-कल्याणकारी वचन ही सुनें। निन्दा, चुगली, गाली या दूसरी-दूसरी पाप की बातें हमारे कानों में न पड़ें और हमारा अपना जीवन यजन-परायण हो—हम सदा भगवान की आराधना में लगे रहें। किसी अमङ्गलकारी अथवा पतन की ओर ले जाने वाले दृश्य की ओर हमारी दृष्टि का आकर्षण न हो। हमारा शरीर और हमारा एक-एक अवयव सुदृढ़ एवं सुपुष्ट हो—वह भी इसलिए कि हम उनके द्वारा भगवान् का स्तवन करते रहें। हमारी आयु भोग-विलास या प्रमाद में न बीते। हमें ऐसी आयु मिले, जो भगवान् के कार्य में आ सके।

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अर्थ—इस अनुवाक में भिन्न-भिन्न शक्तियों ने अधिष्ठाता परब्रह्म परमेश्वर की भिन्न-भिन्न नाम और रूपों में स्तुति करते हुए उनसे प्रार्थना की गई है। भाव यह है—

दिन और प्राण के अधिष्ठाता मित्र (सूर्य) देवता हमारे लिए कल्याणप्रद हों, जल के देवता वरुण कल्याणकारी हों। चक्षु और सूर्यमंडल के अधिष्ठाता अर्यमा हमारे लिए कल्याणकारी हों। वलके देवता इन्द्र तथा वाणी और बुद्धि के अधिष्ठाता वृहस्पति हमें कल्याण प्रदान करें। वामनावतार के समय तीनों लोकों को दो कदमों में नापने वाले त्रिविक्रमरूप भगवान् विष्णु —हमें कल्याण दें। हमारा सभी देवताओं के आत्मस्वरूप ब्रह्म को नमस्कार हो। हे वायुदेव ! तुम्हें नमस्कार हो। तुम ही वायुरूप में, प्रत्यक्षब्रह्म हो। मैं तो तुम्हें प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। तुम्हें ऋत कहूँगा, तुम्हें 'सत्य' पुकारुंगा। वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर मेरी रक्षा करे और मेरे गुरु की रक्षा करे। ओं भगवान् शान्ति रूप हैं ! शान्ति रूप हैं !! शान्ति रूप हैं !!!

इति ब्रह्मयज्ञः

२. देवयज्ञ

पवित्र भूमि पर सामने कुण्ड रखकर उसमें, जिस अग्नि में भोजन बनाया हो, उस अग्नि को लाकर स्थापित करें और उसके पास घी वाले पके चावल तांबे के बर्तन एवं पत्ते पर रख कर पूर्व की ओर मुंह करके आचमन, प्राणायाम और संकल्प करें। उसके बाद कुंड वाली अग्नि को जलाकर उसका ध्यान आवाहन और पूजन करें। अब **'ओम् अग्नये नमो नमः'** कहकर दाहिने हाथ से कुण्ड के चारों ओर जल सींचें और पास में रखे हुए चावलों को गायत्री मन्त्र से सींचें। फिर प्रज्वलित अग्नि में सीधे हाथ से चावलों की आहुतियां नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर डालें—

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न मम ।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।

इति देवयज्ञः

३. भूतयज्ञ

अब अग्नि के पश्चिम भाग में भूमि पर जल से एक बालिश्त पर एक मण्डल बनायें (अर्थात् पत्ते आदि या बर्तन आदि रखें। उसके ऊपर कुशा रखकर नीचे लिखे मन्त्रों से बलि दें--

१. (दक्षिण को) ॐ धात्रे नमः। इदं धात्रे न मम ।
२. (उत्तर को) ॐ विधात्रे नमः । इदं विधात्रे न मम।
३. (मध्य में) ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम ।
४. (मध्य में) ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः । इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम ।
५. (उत्तर में) ॐ भूतानां च पतये नमः । इदं भूतानां च पतये न मम ।

इति भूतयज्ञः

४. पितृयज्ञः

इसके अनन्तर बायें घुटने को पृथिवी पर धरकर दक्षिण की ओर मुख करके अपसव्य होकर पितृतीर्थ (दायें हाथ के

अँगूठे और पहली अँगुली के बीच) से देवयज्ञादि से बचे हुए अन्न से पितृबलि नीचे लिखे मन्त्र से देवें—

ओ३म् पितृभ्यः स्वाहा, इदं पितृभ्यो न मम ॥

अब यज्ञोपवीत कण्ठ में करके उसी अन्न वाले खाली पात्र में जल डालकर उसको धोकर वह जल नीचे लिखे मन्त्र से वायव्य कोण में छोड़ना चाहिए।

ओ३म् यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनम् नमः। इदं यक्ष्मणे न मम।

इति पितृयज्ञः

५. मनुष्ययज्ञ

तदनन्तर जो भोजन अपने लिए तैयार हो उसमें से एक ग्रास मात्र लेकर मनुष्ययज्ञ इस मन्त्र से करें।

ओ३म् हन्त त इदमन्नं सनकादिमनुष्येभ्यः।

ओ३म् इदं सनकादिमनुष्येभ्यो न मम।

इति मनुष्ययज्ञः

अग्निविसर्जन

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

अर्थ—हे देवताओं में श्रेष्ठ परमेश्वर अग्निदेव! अब आप अपने स्थान की ओर पधारिये, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता रहते हैं।

भूतबलिः

अब तैयार भोजन में से थोड़ा अन्न लेकर गौ आदि के निमित्त पृथ्वी पर रख दें और आगे लिखे मन्त्र पढ़े—

गौ के लिए बलि

ॐ सुरभी वैष्णवी माता, नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
गोग्रासन्तु मया दत्तं, सुरभिः प्रतिगृह्यताम् ।।
इदं गोभ्यो न मम ।

अर्थ—गौ वैष्णवी माता है और विष्णु के पास रहती है (भगवान् कृष्ण ने भी गौओं का पालन किया) मैं इस गोग्रास को देता हूँ। देवी गौ इसे ग्रहण करे। यह अंश गौओं का है, मेरा नहीं।

कुत्ते के लिए बलि

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामधवलौ, वैवस्वत-कुलोद्भवौ ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि, स्यातामेतावहिंसकौ ।।
इदं श्वभ्यां न मम ।

अर्थ—दो कुत्ते हैं जो काले और सफेद हैं और वैवस्वत के कुल में उत्पन्न हुए हैं। उन्हें मैं यह अन्न देता हूं। वे दोनों अहिंसक बन जायें। यह अंश कुत्तों का है, मेरा नहीं।

कौए के लिए बलि

ॐ यमोऽसि यमदूतोऽसि, वायसोऽसि महामते ।
इदमन्नं मया दत्तम्, वायसः प्रतिगृह्यताम् ।।
इदं वायसेभ्यो न मम ।

अर्थ—हे महान् बुद्धिमान् कौए ! तुम यम हो और यमदूत हो। मैं तुम्हें यह अन्न देता हूँ। तुम कौए इसे ग्रहण करो। यह अंश कौओं का है, मेरा नहीं।

इति भूतबलिः।

इति बलिवैश्वदेवप्रयोगः।

भोजन-विधि

जल से चौकोन लेप कर उसके ऊपर अन्न की थाली रखकर दिन में तथा रात को नीचे लिखे मन्त्रों से जल से अन्न को सींचे और भगवान् को भोग लगायें।

(दिन में) सत्यं त्वर्तेन परिषिंचामि।

(रात्रि को) ऋतं त्वां सत्येन परिषिंचामि।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से तीन आचमन करें—

ओं अमृतोपस्तरणमसि।

अब नीचे लिखे मन्त्र से भगवान् का ध्यान करके भोजन को भगवान् के अर्पण करें।

अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः।
एवं ध्यात्वा तु यो भुंक्ते सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते॥

अर्थ—'अन्न ब्रह्मा स्वरूप है, अन्न का रस विष्णुरूप है और अन्न को खाने वाले महादेव शिव हैं' इस प्रकार ध्यान करके जो व्यक्ति अन्न खाता है वह अन्न के दोष से लिप्त नहीं होता।

अब नीचे लिखे मन्त्र से थाली के चारों ओर जल सींचें और प्रणाम करें।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्मसमाधिना॥

अर्थ—यह अन्नरूपी ब्रह्म की आहुति ब्रह्म के ही अर्पण हो। ब्रह्मा ने ब्रह्म की अग्नि में इसे यज्ञ किया। उस ब्रह्मकर्म की समाधि वाले व्यक्ति के साथ ब्रह्म ही जाता है।

(अब शान्त चित्त से भोजन करें।)

भोजन करने के बाद यह मन्त्र पढ़ें—

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥

अर्थ—अन्न से सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, बादलों से अन्न उत्पन्न होता है, यज्ञ से बादल बनते हैं अतः यज्ञ सब कर्मों का उद्भव (मूल) है।

कुल्ला करके नीचे लिखे मन्त्र से पेट पर हाथ फेरें—

अगस्त्यं वैनतेयं च शनिं च वडवानलम् ।
अन्नस्य परिणामार्थं स्मरेद् भीमं च पंचमम् ॥

अर्थ—भोजन खाने के बाद मनुष्य अगस्त्य ऋषि, गरुड़, शनि, वडवानल (समुद्राग्नि) और पांचवें भीम को अन्न के पाचन के लिए स्मरण करें।

इति भोजनविधिः।

ॐ

अथ सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।

यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ।।१।।

अर्थ—भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए गीता में कहते हैं—जो मनुष्य 'ओम्' इस एक अक्षर वाले ब्रह्मशब्द का उच्चारण करता हुआ और मुझे स्मरण करता हुआ इस शरीर को छोड़कर जाता है वह परमगति (मोक्ष) को प्राप्त करता है।

स्थाने हृषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवंति सर्वे नमस्यंति च सिद्धसंघाः ।।२।।

अर्थ—अर्जुन ने कहा—हे भगवन् ! यह उचित ही है कि आपके नाम और प्रभाव के कीर्तन से जगत् अति हर्षित होता है और अनुराग को भी प्राप्त होता है तथा भयभीत राक्षस दिशाओं को भागते हैं और सब सिद्धगण आपको नमस्कार करते हैं।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ।।३।।

अर्थ—श्री भगवान् ने कहा—वह ब्रह्म सब ओर से हाथ पैर वाला एवं सब ओर से नेत्र, सिर और मुख वाला तथा सब ओर से कानों वाला है। क्योंकि वह संसार में सबको व्याप्त करके विद्यमान है।

कविं पुराणमनुशासितार-

मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।।४।।

अर्थ—जो पुरुष सर्वज्ञ, अनादि, नियन्ता, अणु से भी सूक्ष्म, सबके धारण (पोषण) करने वाले, अचिन्त्यस्वरूप, सूर्य के समान सदा तेजस्वी, अविद्या (अज्ञानान्धकार) से बहुत परे शुद्ध परमात्मा का स्मरण करता है वही परब्रह्म को पाता है।

ऊर्ध्वमूलमधः शाख-मश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।।५।।

अर्थ—भगवान् कहते हैं—आदिपुरुष परमेश्वर एक ऐसा पीपल का वृक्ष है जिसकी जड़ें ऊपर हैं और शाखाएँ नीचे हैं। वह अव्यय (अविनाशी) है। वेद जिसके पत्ते हैं, उस तत्त्व को जो जानता है वही वेद के तात्पर्य को जानने वाला है।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ।।६।।

अर्थ—श्रीकृष्ण कहते हैं—मैं ही सब प्राणियों के हृदय में स्थित हूं तथा मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और संशय आदि दोषों के हटाने की शक्ति मनुष्य में विद्यमान रहती है। सब वेदों द्वारा मैं ही जानने योग्य हूँ तथा वेदान्त-रचयिता तथा वेदों का ज्ञाता मैं ही हूँ।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ।।७।।

अर्थ—श्री भगवान् कहते हैं—हे मानव ! तू मुझ सच्चिदा-

नन्द स्वरूप परमात्मा में अचल मन वाला हो जा, केवल मुझे ही आनन्द भाव से भजने वाला बन जा, केवल मेरा ही पूजन और यज्ञ करने वाला होकर मुझे ही नमस्कार कर। इस प्रकार मेरी शरण में आया हुआ तू आत्मा को मेरे मन में एकीभाव करके मुझे प्राप्त कर लेगा (मुक्त हो जायेगा)।

सप्तश्लोकी भागवत

श्रीभगवानुवाच (श्री भगवान् जी बोले—)

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् ।
सरहस्यं तदंगं च गृहाण गदितं मया ॥१॥

अर्थ—विज्ञान से युक्त, परमगुप्त मेरा ज्ञान है। रहस्ययुक्त और अंग सहित उस ज्ञान को मैं कहता हूँ, तुम उसे ग्रहण करो।

यावानहं यथा भावो यद्रूपगुणकर्मकः ।
तथैव तत्त्वविज्ञान-मस्तु ते मदनुग्रहात् ॥२॥

अर्थ—जैसा मैं हूँ, जैसा मेरा भाव है और जैसा रूप, गुण और कर्म है, मेरी कृपा से वैसा ही तत्त्वज्ञान तुम्हें प्राप्त हो।

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत्परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥३॥

अर्थ—पहले भी मैं था और भविष्य में भी मैं ही होऊँगा, इससे अतिरिक्त और कुछ नहीं, जो सत् और असत् से भी परे है, जो बाद में बच जाये वह भी मैं ही हूँ।

ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथा भासो यथा तमः ॥४॥

अर्थ—सत्य में जो अर्थ प्रतीत हो और आत्मा में प्रतीत न हो उसे आत्मा की माया समझो। मायावृत व्यक्ति के लिए जैसे

प्रकाश वैसे ही अँधेरा ।

यथा महांति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ।।५।।

अर्थ—जैसे बड़े प्राणी ऊँच-नीच प्राणियों में प्रविष्ट होते हैं तथा उनमें प्रवेश नहीं भी करते—मैं उनमें से नहीं हूँ अर्थात् इनसे परे हूँ (निर्लेप हूं) ।

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मना ।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात् सर्वत्र सर्वदा ।।६।।

अर्थ—तत्त्व के जिज्ञासु व्यक्ति के लिए यही जानने योग्य बात है जो सदा और सर्वत्र विधि एवं निषेध के सिद्धान्त से वर्तमान है ।

एतन्मतं समादिष्टं परमेण समाधिना ।
भवान् कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कश्चन ।।७।।

अर्थ—उच्चकोटि के समाधिधारी योगी ने निश्चित रूप से यह विचार प्रकट किया है । इसलिए आप कल्पविकल्पों में अर्थात् संदेह की बातों में भ्रम में पड़ें ।

विष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्

अर्जुन उवाच (अर्जुन ने पूछा—)

किं नु नाम सहस्राणि जपन्ते च पुनः पुनः ।।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव ।।१।।

अर्थ—भगवान् के हजारों नाम, जिन्हें लोग बार-बार जपते हैं, उनमें से जो दिव्य नाम हैं, हे केशव ! उन्हें बताइए ।

श्रीभगवानुवाच (श्रीभगवान् बोले—)

मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम् ।
गोविंदं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ॥२॥
पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालिं हलायुधम् ।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम् ॥ ३॥
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम् ।
दामोदरं श्रीधरं च वेदाङ्गं गरुड़ध्वजम् ॥४॥
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम् ।
गवां गोटिप्रदानस्य अश्वमेधशतस्य च ॥५॥
कन्यादानसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः ।
अमायां वा पौर्णमास्यामेकादश्यां तथैव च ॥६॥
संध्याकाले स्मरेन्नित्यं प्रातःकाले तथैव च ।
मध्याह्ने च जपेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥७॥

अर्थ—'पद्मनाभ' से लेकर 'कृष्णगोपाल' तक ये भगवान् के (२८) अट्ठाईस दिव्य नाम हैं—इनके जपने वाले को कोई पाप नहीं लगता। करोड़ों गौवों के दान का फल, अश्वमेध यज्ञ का फल और हजार कन्यादानों के फल को मनुष्य प्राप्त करता है। अमावस्या, पूर्णिमा और एकादशी के दिन तथा प्रतिदिन प्रातः सायं और दोपहर को जो व्यक्ति इन नामों को स्मरण करता है या जपता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

पंचश्लोकी दुर्गापाठ

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥१॥

अर्थ—हे सर्व कल्याण-स्वरूपिणि ! सबके काम सिद्ध करने वाली, कल्याणकारिणी ! शरण में आये हुए की रक्षा करने वाली, तीन नेत्रों वाली गौरी और नारायणी देवि ! तुम्हें मेरा बार-बार नमस्कार हो ।

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥२॥

अर्थ—श्री दुर्गा देवी भक्त पर प्रसन्न होकर कह रही हैं—मनुष्य मेरी कृपा से सब कष्टों से मुक्त हो जाता है तथा धन-धान्य और पुत्रों से युक्त हो जाता है—इसमें संदेह नहीं है ।

शरणागतदीनार्त-परित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥

अर्थ—भक्त देवी को प्रार्थना करता है—हे देवि नारायणि ! तुम शरण में आये हुए दीन-दुखियों को रक्षा करने वाली हो तथा सबके दुखों को दूर करने वाली हो । हे दुर्गे ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥४॥

अर्थ—हे देवि ! तुम शरण में आये व्यक्ति के दुखों को हरण करने वाली हो, तुम मुझ पर प्रसन्न होवो, कृपा करो । हे दुर्गे ! तुम सम्पूर्ण संसार की माता हो, मुझ पर प्रसन्न होवो। हे सारे संसार की स्वामिनी ! प्रसन्न होकर विश्व की रक्षा करो । हे देवि ! तुम चर और अचर (स्थावर और जंगम)

संसार की ईश्वरी भगवती देवी हो! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।५।।

अर्थ—जयंती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा इन नामों वाली देवी भगवती को नमस्कार हो।

एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादि-गमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम्।।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम्।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननम् एतद्धि रामायणम्।।

अर्थ—सबसे पहले श्रीराम का वन में जाना, वहाँ सोने के मृग को मारना, सीता का हरण होना और जटायु का मरना, फिर सुग्रीव से बातचीत और मित्रता, बाली को मारना, समुद्र को तैरकर, हनुमान जी द्वारा लंका का जलाना, इसके बाद श्रीराम द्वारा रावण और कुम्भकर्ण का हनन—ये ही बातें राम के उत्कृष्ट चरित्र ग्रन्थ रामायण में हैं।

एकश्लोकी श्रीमद्भागवत

आदौ देवकी-देवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनम्।
मायापूतनाजीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम्।।
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम्।
एतत् श्रीमद्भागवत-पुराणकथनं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।

अर्थ—पहले भगवान् विष्णु श्रीकृष्ण रूप में देवकी और वसुदेव से उत्पन्न हुए, श्रीकृष्ण ने गोवर्धन का उद्धार किया। माया से सुन्दर शरीरधारी पूतना राक्षसी के जीवन का हरण किया। कंस का मारण और कौरवों का नाश कर पाण्डवों का पालन किया। यही श्रीकृष्ण की लीलारूपी अमृतवर्षा से युक्त श्रीमद्भागवत पुराण की कथा है।

एकश्लोकी गीता

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

अर्थ—सर्व धर्मों को अर्थात् संपूर्ण कर्मों के आश्रय को त्याग कर केवल एक मुझ सच्चिदानन्द वासुदेव परमात्मा की ही अनन्य शरण को प्राप्त हा। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा। अतः तू चिन्ता मत कर।

भावार्थ–संसार की सब वातों को छोड़कर जो व्यक्ति ईश्वर की शरण में चला जाता है, उसकी रक्षा का भार परमेश्वर का हो जाता है और एक दिन वह सब दुःखों और पापों से छूटकर मुक्त हो जाता है। इसलिए हे मानव! तू उसी की तन मन धन से शरण में चला जा और उसी के आगे आत्मसमर्पण कर दे।

गुरु-स्तुति-श्लोकाः

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्र-मूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटी-युग-धारिणे नमः॥१॥

अर्थ--सहस्रों स्वरूपों वाले, सहस्रों नेत्रों, सिरों, जंघाओं

और बाहुओं वाले, सहस्रों नामों वाले, सहस्रकोटि युगों तक जगत् को धारण करने वाले सनातन अनन्त पुरुष को नमस्कार हो।

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ।।२।।

अर्थ—नाभि में कमल वाले विष्णु को नमस्कार हो। जल में शयन करने वाले विष्णु को नमस्कार हो। हे केशव, हे अनन्त, तुम्हें नमस्कार हो, वासुदेव तुम्हें बार-बार नमस्कार हो।

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूत-निवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ।।३।।

अर्थ—वासुदेव भगवान् के बसाने से ही तीनों लोक बसे हुए हैं। हे वासुदेव, आप सब प्राणियों में निवास करने वाले हैं अतः आपको नमस्कार हो।

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्र-भाष्य-कृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ।।४।।

अर्थ—शंकररूप शंकराचार्य की और विष्णुरूप वेदव्यास को—भाष्यकार और सूत्रकार दोनों भगवत्स्वरूपों को—मैं बार-बार वन्दना करता हूं।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।५।।

अर्थ—जिसके द्वारा यह अखण्ड मण्डलाकार चराचर जगत् व्याप्त है। वह परम पद जिस गुरु ने दिखा दिया है उन श्री गुरुदेव को नमस्कार हो।

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने ।
व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः ।।६।।

अर्थ—ईश्वर, गुरु और आत्मा इन तीन स्वरूपों का विभाग करने वाले किन्तु आकाश के समान सब रूपों में व्याप्त श्री दक्षिणामूर्ति गुरुदेव को नमस्कार हो।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥७॥

अर्थ - गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं और गुरुदेव ही महेश्वर हैं। गुरु ही प्रत्यक्ष परब्रह्म हैं, उन श्रीगुरुदेव को नमस्कार हो।

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥८॥

अर्थ—आकाश से गिरा हुआ जल जैसे समुद्र में जाता है ऐसे ही समस्त देवताओं के प्रति किया गया नमस्कार भगवान् विष्णु के प्रति जाता है।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरुकृपा ॥९॥

अर्थ—गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल है, गुरु के चरण पूजा का मूल हैं, गुरु का वाक्य मन्त्र का मूल है और गुरु की कृपा मोक्ष का मूल है।

वसुदेवसुतं देवं कंस-चाणूर-मर्दनम्।
देवकी-परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥१०॥

अर्थ—वसुदेव के पुत्र, देवकी के परम आनन्ददाता, कंस और चाणूर के निहन्ता जगद्गुरु श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ।

प्रपन्न-पारिजाताय तोत्रवेत्रैकपाणये।
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः ॥११॥

अर्थ—शरणागत जनों के लिये कल्पवृक्षरूप, एक हाथ में

चाबुक धारण किये दूसरे हाथ से ज्ञानमुद्रा दिखा रहे गीतारूपी अमृत को दुहने वाले भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार हो।

ईश-वन्दना

ॐ अविनयमपनय विष्णो,
दमय मनः शमय मृगतृष्णाम्।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः॥

अर्थ—हे भगवन् विष्णुदेव! मुझमें विनयहीनता को दूर करो (मुझे नम्र बनाओ)। मेरे मन का दमन करो। मेरी विषयों के प्रति मृगतष्णा (कभी समाप्त न होने वाली लालसा) को शान्त करो। मेरे अन्दर प्राणियों पर दया करने के भाव जागृत करो और आप मुझे संसार सागर से पार करो।

ॐ दिव्यधुनी मकरन्दे परिमल-परिभोग सच्चिदानन्दे।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे॥

अर्थ—भगवान् विष्णु के चरण-कमलों को मैं प्रणाम करता हूँ। वे चरण-कमल कैसे हैं? जिन चरण-कमलों में देवनदी गंगा मधु के समान है—और सत्, चित्, आनन्द तत्त्व जिन चरण-कमलों की सुगन्धि का उपभोग हैं। वे चरण-कमल संसार के भय और दुःखों को काटने वाले हैं (अर्थात् संसार के बंधन काटकर मोक्ष प्रदान करने वाले हैं)।

ॐ सत्यपि भेदापगमे, नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरंगः क्वचन समुद्रो न तारंगः॥

अर्थ—हे नाथ! भेद दूर होने पर भी 'मैं आपका हूँ' और 'आप मेरे नहीं हैं' यह कहने का उत्साही नहीं हूं। जैसे तरंग समुद्र का अंश होता है किन्तु कहीं समुद्र तरंग का अंश नहीं होता।

उद्धृतनग नगभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे ।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ॥

अर्थ—हे गोवर्धनधारी, हे इन्द्र के अनुज उपेन्द्र, हे दानव-कुल के शत्रु, हे सूर्य चन्द्ररूप नेत्रों वाले ! जब आप प्रभु का दर्शन हो जाता है तब क्या संसार-बन्धन नहीं छूट जाता, अपितु अवश्य ही छूट जाता है।

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवता सदा वसुधाम् ।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥

अर्थ– मत्स्य कच्छप आदि अवतारों के द्वारा अवतारी प्रभु, आपने सदा संसार की रक्षा की है। हे परमेश्वर, आज संसार के तापों से भयभीत मुझ जीव की भी आपको रक्षा करनी चाहिये।

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥

अर्थ—हे दामोदर, हे गुणों के मन्दिर, हे सुन्दर कमल मुख वाले गोविन्द, हे संसारसागर को मथने वाले मन्दराचल, आप मेरे भारी भय को दूर कर दें।

नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥

अर्थ—हे करुणामय नारायण ! मैं आपके दोनों चरणों की शरण लेता हूँ। यह छह पद्यों वाली स्तुति षट्पदी (भौंरी) बनकर सदा मेरे मुख-कमल में निवास करे।



भजन १.

मुख से राधा कृष्ण बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
तेरे हाथ पाँच नहीं हिलते, दस-बीस कोस नहीं चलते।
विरहों की गांठ न खुलती, तू मन की घुंडी खोल।
मुख से राधा-कृष्ण बोल···॥
तेरा घोड़ा है बहुरंगी, घोड़े की पाँच बछेरी।
ये पांचों फिरें लुटेरी, पाँचों की वागाँ मरोड़॥
मुख से राधा-कृष्ण बोल···॥
यह संसार काँच की बाजी, तू किस पर हुआ है राजी।
यह सकली स्वप्न समाजी, तू इस पर मन ना डोल।
मुख से राधा-कृष्ण बोल ·॥
तुझे बहुत गुरु समझावे, तू फिर कर जन्म न पावे।
साँचा हरि-चरणन चित लावे, झूठे जग का नाता तोड़।
मुख से राधा-कृष्ण बोल···॥

भजन २. (महात्मा गांधी जी का)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत हे सो खोवत है।
टुक नींद से अखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है।
उठ जाग मुसाफिर···!
जो कल करना सो अज कर ले, जो अज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है।
उठ जाग मुसाफिर···!
नादान भुगत करनी अपनी, ऐ पापी, पाप में चैन कहाँ ?
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है ?
उठ जाग मुसाफि···!

भजन ३. (स्वामी रामतीर्थ जी का)

यह खेल क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूं ।
बग़ैर सूरत अजब है जलवा; कि राम मुझमें, मैं राम में हूं ।।

मुरक्का[1] हुस्न व इश्क हूं मैं, कि मुझमें राज़ व न्याज़[2] सब है ।
मैं अपनी सूरत पर आप शैदा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूं ।।

ज़माना आईना राम का है, कि हर एक सूरत से है वह पैदा ।
जो चश्मे हक्कबीन[3] खुली, तो देखा, कि राम मुझमें मैं राम में हूं ।।

वह मुझसे हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है ।
हुबाब[4] दरिया का यह तमाशा, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ।।

सबब बताऊँ वजद[5] का मैं क्या, कि क्या दर परदा देखता हूं ।
सदा[6] यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझमें है मैं राम में हूं ।।

बसा है दिल में वह मेरे दिलवर, कि आईना में खुद आइनागर ।
अजब तग़य्यर[7] हुआ यह कैसा, कि राम मुझमें मैं राम में हूं ।।

मुकाम पूछा तो लामकाँ था, न राम ही था न मैं वहाँ था ।
बदली करवट तो होश आया, कि राम मुझमें मैं राम में हूं ।।

इल्तवातर[8] यह पाक जलवा, कि दिल बना तूर[9] बरक[10] सीना ।
तड़प के दिल यूं पुकार उट्ठा, कि राम मुझमें मैं राम में हूं ।।

जहाज दरिया में और दरिया जहाज में भी देखिये आज ।
यह जिस्म किश्ती है राम दरिया, कि राम मुझमें मैं राम में हूँ ।।

---

१. आशिक व माशूक का सम्मिलित रूप। २. भेद व भेद का ज्ञाता। ३. अन्दर की असली आँखें। ४. बुलबुला। ५. मस्ती। ६. आवाज़। ७. परिवर्तन। ८. लगातार। ९. कोहेतूर पर्वत—जहाँ मूसा ने ईश्वर का साक्षात्कार किया। १०. बिजली।

भजन ४.

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में ।।
मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूं मैं दुनिया का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण-दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।
जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, निराकार तुम्हारे हाथों में ।।
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं, तुम नारायण हो ।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।
जब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में ।।

प्रार्थना (१)

नारायण तुम दीनदयालु, राखनहार सदा रखवालू ।
मैं अल्पज्ञ जीव हूँ पापी, तू परमेश्वर सर्वव्यापी ।।
मैं अज्ञानी कपटी कामी, तू परमेश्वर अन्तर्यामी ।
मैं अतिनीच महा हत्यारा, तेरा नाम है बख्शन हारा ।।
तू ही पिता है तू ही माता, देवनहार सर्व का दाता ।
मन्द भाग्य मथे का हीना, मुख से नाम न तेरो लीना ।।
काटो जन्म मरण को फांसी, पूर्ण पुरुष चित्त अविनाशी ।
मेरा नरक बीच नहीं थाऊँ, कृपा सिंधु किधर को जाऊँ ।।
अवगुण देख दुष्ट नहीं मारो, अपनां दया दृष्टि से तारो ।
दुख में पड़ा नरक का कीड़ा, हरजी हरो हमारो पीड़ा ।।

नाम दान मोहे दीजिए, मैं कुछ न मांगूं और।
सियावर रघुनाथ जी, तुझ बिन और न ठौर॥

कर्मान्त में श्रीकृष्ण प्रार्थना (२)

इतना तू करना स्वामी, जब प्राण तन से निकलें।
गोविन्द नाम लेकर, मेरे प्राण तन से निकलें ॥१॥
श्री गंगाजी का तट हो, या यमुना जी का बट हो।
मेरा साँवरा निकट हो, तव प्राण तन से निकलें ॥२॥
श्री वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसीदल हो।
विष्णु चरण का जल हो, तव प्राण तन से निकले ॥३॥
सम्मुख साँवरा खड़ा हो, बंसी का सुर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो तव प्राण तन से निकलें ॥४॥
सिर सोहना मुकुट हो मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो, जव प्राण तन से निकलें ॥५॥
जब कंठ प्राण आवें, कोई रोग ना सतावें।
यम दर्श ना दिखावे, तब प्राण तन से निकलें ॥६॥
मेरे प्राण निकलें सुख से तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊँ घोर दुख से तब प्राण तन से निकलें ॥७॥
उस वक्त जल्दी आना, ना श्याम भूल जाना।
बंसी की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकलें ॥८॥
छोटी सी यह अरज है, मानो तो क्या हरज है।
कुछ आपका फरज़ है, जब प्राण तन से निकलें ॥९॥
घनश्याम की यह अरज़ी, खुदगर्ज की यह गरजी।
आगे तुम्हारी मरज़ी, जब प्राण तन से निकलें ॥१०॥



प्रार्थना (३)

हे प्रिय ! तुझ बिन दूसर नाहीं ।
मैं तेरी सब तेरी मांहीं ।।

आद अन्त तू एको गाया ।
वृथा अहम् मैं आप बनाया ।।

जो कुछ है सो तू ही तू ।
मुझ विच दूर करो प्रभो 'हूँ' ।।

रोम रोम में तू ही मुरारी ।
तुझ बिन मैं की चीज़ विचारी ।।

तू ही सर्व का रूप असंगा ।
जहँ जहँ पूरण तुमरो रंगा ।।

अमृत कुंड तू ही प्रभ मेरे ।
तुझ बिन दुःख लिये बहुतेरे ।।

ताकी खोल, दर्स दे प्यारे ।
तुमरो रूप लखों मैं सारे ।।

अन्तिम प्रार्थना

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।

अर्थ—अज्ञान व आलस्य से काम करने वाले हमारे यज्ञ में या प्रार्थना में जो कमी रह गयी हो, हे परमेश्वर उस को क्षमा करें और प्रसन्न हों ।

दीनं हीनं सेवया ~~वेदवित्तया~~, वेदवत्या
पापैस्तापैः पूरितं मे शरीरम् ।
लोभाक्रान्तं शोक-मोहाभिविद्धम्,
कृपादृष्ट्या पाहि मां वासुदेव ।।

अर्थ—मैं दीन हूँ । मैं वेद के अनुसार सेवा करने से भी वंचित हूँ । पापों से और संसार के दुखों से मेरा शरीर भरा हुआ है । हे भगवन् ! वासुदेव ! कृपया मेरी रक्षा करें ।

आरती विष्णुजी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट छिन में दूर करे।
ॐ जय० ॥१॥

जो ध्यावै फल पावे, दुख बिनसे मन का।
सुख सम्पत्ति गृह आवै, कष्ट मिटे तन का।
ॐ जय० ॥२॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।
ॐ जय० ॥३॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।
ॐ जय० ॥४॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन करता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता।
ॐ जय० ॥५॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं गुसाईं, तुमको मैं कुमति।
ॐ जय० ॥६॥

दीनबन्धु दुखहरता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।
ॐ जय० ॥७॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।
ॐ जय० ॥८॥



आरती शिव जी की

ॐ जय शिव ओंकारा ॐ हरशिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्धङ्गी गौरा ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन छाजै ॥१॥
ॐ जय शिव० ।

दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज तुम सोहे ।
त्रिगुणारूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥२॥
ॐ जय शिव० ।

अक्षमाला वनमाला मुंडमाला धारी ।
चन्दन मृगमद लोचन महिमा सुखकारी ॥३॥
ॐ जय शिव० ।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥४॥
ॐ जय शिव० ।

कर मध्ये कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्त्ता जगहर्ता जगपालन कर्ता ॥५॥
ॐ जय शिव० ।

चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरो ।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू ॥६॥
ॐ जय शिव० ।

त्रिगुणात्मक जी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावै ॥
ॐ जय शिव० ॥७॥



आरती अम्बाजी की

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय अम्बे गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री ।।ॐ जय।।
माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को, मैया टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नैना चन्द्रबदन नीको ।।ॐ जय०।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै, मैया रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गलमाला कण्ठन पर साजै ।।ॐ जय०।।
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती, मैया नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।।ॐ जय०।।
केहरिवाहन राजत, खड्ग खपरधारी, मैया खड्ग खपरधारी।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुख हारी ।।ॐ जय०।।
मधुकैटभ मदहरता, महिषासुरघाती, मैया महिषासुरघाती।
धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ।।ॐ जय०।।
चण्ड मुंड संहारे शोणित बीज हरे, मैया शोणित बीज हरे।
शुंभ निशुंभ संहारे निर्भय राज करे ।।ॐ जय०।।
ब्रह्मादिक, रुद्रादिक, इंद्रादिक ध्यावै, मैया सनकादिक ध्यावै।
सुर नर मुनिजन सेवत सुख-सम्पत्ति पावै ।।ॐ जय०।।
चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैरों मैया नृत्य करत भैरों।
वाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू ।।ॐ जय०।।
तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी तुम कमलारानी मैया तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।।ॐ जय०।।
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती, मैया अगर कपुर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ।।ॐ जय०।।
अम्बे जी की आरती जो कोई नर गावे, मैया जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी सुख सम्पत्ति पावै ।।ॐ जय०।।



कमलनेत्र स्तोत्र

कमल नेत्र कटि पीताम्बर अधर मुरली गिरिधरम् ।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया साँवरे राधेवरम् ।।१।।
कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मन हरम् ।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन चरण नित सुख सागरम् ।।२।।
करत केलि कलोल निशि दिन कुञ्ज भुवन उजागरम् ।
अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरम् ।।३।।
दीनानाथ दयालु गिरिधर कंस हिरणाक्षसहरम् ।
गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुंदर केशवम् ।।४।।
वंशीधर वसुदेव छैया बलि छल्यो हरि वामनम् ।
जल डूबते गज राख लीनो लंक छेद्यो रावणम् ।।५।।
सप्तदीप नवखण्ड चौदह भुवन कीनो रामजी एक पलम् ।
द्रौपदी की लाज राखी कहां लौं उपमा करम् ।।६।।
दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरम् ।
कविदत्त दास विलास निशिदिन नाम जपत नित नागरम् ।।७।।
प्रथम गुरुजी के चरण बन्दौं जहाँ ते ज्ञान प्रकाशितम् ।
आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरम् ।।८।।
श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण यदुपति केशवम् ।
श्री राम रघुवर रामरघुवर राम रघुवर राघवम् ।।९।।
श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव हरि वामनम् ।
मच्छ कच्छ वराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनम् ।।१०।।
मथुरा में केशव राय विराजै गोकुल बाल मुकुन्द जी ।
श्री वृन्दाबन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविंद जी ।।११।।
धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहाँ श्रीपति अवतरे ।
धन्य यमुना का नीर निर्मल ग्वाल बाल सखा वरे ।।१२।।
नवनीत नागर करत निर्तत शिव विरञ्चि मन मोहितम् ।

कालिंदी तट करत क्रीड़ा बाल अद्भुत सुन्दरम् ।।१३।।
ग्वाल बाल सब सखा विराजे सङ्ग राधे भामिनी ।
वंशीवट तट निकट यमुना मुरली को टेर सुहावनी ।।१४।।
श्रीकृष्ण कलिमल हरण सबके जो भजे हरिचरण को ।
भक्ति अपनी देहि माधव भवसागर के तरन को ।।१५।।
श्रीजगन्नाथ जगदीश स्वामी श्रीवद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
द्वारका के नाथ श्रीपति केशवं प्रणमाम्यहम् ।।१६।।
श्रीकृष्ण अष्टपदी पठत निशिदिन विष्णुलोक स गच्छतम् ।
गुरुरामानन्द अवतार स्वामी कविदत्तदास समाप्तम् ।।१७।।

भगवान विष्णु की प्रार्थना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान-गम्यम्,
वन्दे विष्णुं भवभय-हरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

अर्थ—भगवान् विष्णु के स्वरूप का वर्णन है—वे विष्णु भगवान् शान्त आकृति वाले, शेषनाग पर सोने वाले, नाभि में कमल धारण किए हुए, देवताओं के स्वामी, सम्पूर्ण संसार के आधारभूत, आकाश के समान नीले, बादल के समान श्याम वर्ण वाले, सुन्दर अंगों वाले, लक्ष्मी के प्राणनाथ, कमल जैसे सुन्दर नेत्रों वाले, केवल योगियों के ध्यान से जानने योग्य, संसार के भय को दूर करने वाले और सर्वलोकों के स्वामी हैं। मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।

अर्थ—हे भगवन्! तुम ही मेरी माता हो, तुम ही मेरे पिता हो, तुम ही मेरे भाई हो और तुम ही मेरे मित्र हो। तुम ही मेरी विद्या (ज्ञान) हो, और तुम ही मेरे धन हो। हे देवताओं के भी देव भगवन्! तुम ही मेरे सब कुछ हो।

श्रीहनुमते नमः।

हनुमान चालीसा

दोहा—श्री गुरुचरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधार।
वरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमरौ पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीश तिहुं लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बलधामा। अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥
महावीर विक्रम वजरङ्गी। कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥
कंचन वरण विराज सुवेशा। कानन कुण्डल कुंचित केशा॥
हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै॥
शंकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग वन्दन॥
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनबे को रसिया। राम लखण सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुवीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्हीं वहुत बड़ाई। कहा भरत सम मम प्रिय भाई॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा। नारद शारद सहित अहीशा।
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कवि कोविद कहि सकै कहाँ ते॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा॥

तुमरो मंत्र विभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना ।।
युग सहस्र योजन जो भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम द्वारे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिन पैठारे।।
सब सुख लहैं तुम्हारी शरना। तुम रक्षक काहू को डरना ।।
आपन तेज सम्हारौ आपै। तीन्हों लोक हाँकते कांपैं।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै ।।
नाशै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत वीरा ।।
संकट से हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन फल पावै ।।
चारों युग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता। असवर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को भावै। जन्म जन्म के दुख बिसरावै ।।
अन्तकाल रघुपति पुर जाई। जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई ।।
संकट हरै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बल वीरा ।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करो गुरुदेव की नाईं ।।
यह शत वार पाठ कर जोई। छूटहि बन्दि महासुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीशा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा—पवनतनय संकट हरण मंगल मंजुल रूप।
राम लखण सीता सहित, हृदय बसहु सूर भूप।।

सियापति रामचन्द्र की जय !

हनुमान जी की प्रार्थना

अञ्जनीनन्दनं वीरं जानकी-शोकनाशकम् ।
कपीशमक्ष-हन्तारं वन्दे लङ्का-भयङ्करम् ॥

अर्थ—अञ्जनी माता के पुत्र, सीता का शोक दूर करने वाले, अक्षयकुमार को मारने वाले और लंका के लिए भयंकर स्वरूप वाले वानरों में श्रेष्ठ वीर हनुमान् जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक अरदास

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा-राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् । दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

अर्थ—हे ब्रह्मदेव, हमारे राष्ट्र में ब्राह्मण ब्रह्मतेज से युक्त हों; क्षत्रिय शूरवीर, धनुर्धारी, नीरोग और महारथी हों; गौएँ दूध देने वाली, बैल भार ढोने वाले, घोड़े शीघ्रगामी हों; स्त्रियाँ पति-पुत्रवती हों। इस यजमान का युवक पुत्र विजयी, रथों में बैठने वाला, सभाओं में महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो, हमारी आवश्यकतानुसार वर्षा हो, हमारी खेती फलवती होकर पके, हमें अप्राप्त वस्तुओं की प्राप्ति और प्राप्त वस्तुओं की रक्षा योगक्षेम द्वारा सिद्ध हो।

अरदास

श्री आदि शक्ति को सुमिर के श्री विष्णु लई ध्याय ।
वाराह कूर्म ते मच्छ जो सर्व थाईं होय सहाय ॥

पुनि जय नरसिंह मनाइये जिन भक्तन कष्ट छुड़ाय ।
श्री वामन सनत्कुमार जी बलिराजा के घर आय ।।
श्री परशुराम अवतार धर पापिन के मान मिटाय ।
श्रीरामचन्द्र रावण को मार्‌यो विभीषण राज्य दिलाय ।।
श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द जिन दर्शन सब दुख जाय ।
श्री निष्कलंक अवतार जी घर नौ निधि आवे धाय ।।

नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, चार वेद, छः दर्शन, अठारह पुराण, श्रुति स्मृति जी का ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम । गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, कावेरी आदि अड़सठ तीर्थों का ध्यान धरके बोलना जी श्रीराम । जगन्नाथ, अमरनाथ, बद्रीनाथ, द्वारकानाथ, रामेश्वर जी का ध्यान धरके बोलना जी श्रीराम ।

हे भक्तवत्सल, पतितपावन दीनानाथ जी, आपके प्यारे सेवकों ने मिलकर सत्संग किया है, एक का अनेक घड़ी सुख लोक-परलोक में प्राप्त होवे । भक्तों को भक्तिदान, मुक्तिदान, श्री गंगा जी का स्नान, तिलक, जनेऊ, लांग, चोटी, संध्या, गायत्री जी की लाज। सनातन धर्म का जय जयकार करके बोलना जो श्रीराम ।

राजा हरिश्चन्द्र, शिवि, दधीचि, मोरध्वज, ध्रुव, प्रह्लाद, पूरण, हकीकत, श्री तेगबहादुर आदि धर्म वीरों का, जिन्होंने धर्म के कारण राजपाट छोड़ा, स्त्री-पुत्र बेचा। कलवत्र (आरा) से चीरे गये पर्वत से गिराये, सूली पर चढ़ाये, बन्द बन्द कटाये, पर धर्म नहीं हारा, तिनकी कमाई का सदका बोलना जी श्री राम । हे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, परिपूर्ण ब्रह्म जी ! आपके प्यारे सेवकों ने शुद्ध श्रद्धा भावना से प्रसाद भेंट किया है, प्रसाद आपकी रसना लगे बालभोग सब सेवकों को मिले, मन के मनोरथ पूर्ण हों । श्वास श्वास आपका नाम स्मरण आवे, हर प्रकार से आपकी सहायता होवे । आपकी कृपा से जगत् का भला, भगवान्‌की अनन्त कला, बोल सियापति रामचन्द्र की जय ।

ॐ

पुरुषसूक्त

वक्तव्य—इन पुरुषसूक्त, रुद्रसूक्त और श्रीसूक्त नामक वैदिक सूक्तों से हवन तो किया ही जाता है साथ ही इनके मन्त्रों से विष्णु और उनके अवतारों का, रुद्र और उनके अंशों का, भगवती और उनके रूपों का षोडश उपचारों से पूजन भी किया जाता है। अतः इन सूक्तों के मन्त्रों के साथ उन उपचारों का भी निर्देश कर दिया गया है। पूजन के समय उपचारों वाले वाक्य मन्त्रों के अन्त में बोलकर उन उपचारों का समर्पण करना चाहिये, किन्तु हवन करते समय मन्त्रों के अन्त में 'स्वाहा' शब्द बोलकर आहुति डालनी चाहिये। वहाँ उपचार वाक्य नहीं बोलना चाहिये।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि॥

अर्थ—सहस्र सिरों वाला, सहस्र नेत्रों या ज्ञानेन्द्रियों वाला, सहस्र चरणों या कर्मेन्द्रियों वाला वह पुरुष ब्रह्माण्डरूपी भूमि को सब ओर से व्याप्त करके स्थित था।

ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, आसनं समर्पयामि॥

अर्थ—वह पुरुष ही—यह सब जो कुछ हो चुका है और जो होने वाला है, जो हो रहा है—तीनों कालों का स्वामी है। अपिच वह अमृत का भी स्वामी है और जो जीवगण अन्न से उत्पन्न होते हैं उनका भी वह स्वामी है।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्थ—इस पुरुष की इतनी महत्ता है, यह पुरुष इससे भी बढ़कर है, उसका एक चरण या चतुर्थांश सब भूत हैं (जो चौदह भुवनों में उद्भिज्ज, स्वेदज और जरायुज हैं) किन्तु उसके तीन अंश अमृत हैं, विनाश रहित हैं और प्रकाशमान हैं।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि ॥

अर्थ—यह पुरुष तीन अंशों में ऊपर देदीप्यमान रहता है और इसका एक अंश यहाँ त्रिलोकी में बीजरूप से चार प्रकार के भूतों में है। उसी कारणभूत एक अंश से समस्त भुवनकोश उत्पन्न हुआ है, भोग युक्त स्वर्ग और भोगयुक्त मोक्ष भी उसी से प्रकट हुए हैं।

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, आचमनीयं समर्पयामि ॥

अर्थ—उस पुरुष से विराट् उत्पन्न हुआ और विराट् से अधिपूरुष अर्थात् प्रधान तेज उत्पन्न हुआ, वह क्षेत्रज्ञ सृष्टिकर्ता ब्रह्मा प्रकट होकर बढ़ा, उसी से पृथिवी पहले प्रकट हुई, उसके बाद ये चार प्रकार के पुर या देह उत्पन्न हुए।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, स्नानीयं समर्पयामि ॥

अर्थ—उस सर्वहुत यज्ञपुरुष से दधिमिश्र आज्य (दही के साथ घी) सम्पादित हुआ, इसके लिए उस पुरुष ने वायुदेवता वाले उन पशुओं की रचना की तथा जो जंगली और ग्राम्य पशु हैं उनकी भी रचना की।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, वस्त्रं समर्पयामि ॥

अर्थ—उस सर्वहुत यज्ञ से ऋचाएँ और साम प्रकट हुए, उससे छन्द भी प्रकट हुए तथा उससे यजुष् भी प्रकट हुए। (इस प्रकार उस पुरुष से ही चारों वेदों का आविर्भाव कहा गया है)।

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥

अर्थ—उससे अश्व (घोड़े) उत्पन्न हुए और जो दोनों ओर दांत वाले गर्दभ (गधा) आदि पशु हैं वे भी उत्पन्न हुए। उससे गौएँ उत्पन्न हुईं, उसी से भेड़-बकरियाँ उत्पन्न हुईं।

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, गन्धमालेपयामि ॥

अर्थ--सृष्टि के पूर्व में प्रकट हुए उस यज्ञपुरुष का बर्हिष् (कुशा) से प्रोक्षण किया और देवों, साध्यों, ऋषियों ने उसके द्वारा यज्ञ किया।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमरू पादा उच्येते ।
ॐभूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, पुष्पाणि समर्पयामि ।।

अर्थ—देवों ने जिस यज्ञपुरुष का विधान किया था उसकी कितनी प्रकार से अवयव कल्पना की, उसका मुख क्या था, बाहु क्या थे, ऊरु या जंघाएँ क्या थीं और चरण क्या कहे गये !

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रो अजायत ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, धूपमाघ्रापयामि ।।

अर्थ—ब्राह्मण उस पुरुष का मुख था, क्षत्रिय बाहुओं से बनाया गया था, जो वैश्य है वह ऊरु या जंघा से बनाया गया था, तथा चरणों से शूद्र बना था ।

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, दीपं प्रदर्शयामि ।।

अर्थ—उस पुरुष के मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, नेत्र से सूर्य उत्पन्न हुआ । श्रोत्र से वायु और प्राण तथा मुख से अग्नि उत्पन्न हुआ ।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षँशीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, अमृतस्वरूपं नैवेद्यं निवेदयामि ।।

अर्थ—उस पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष हुआ, सिर से द्युलोक हुआ, चरणों से भूमि, श्रोत्र से दिशाएँ तथा लोक निर्मित हुए ।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, ताम्बूलं समर्पयामि ॥

अर्थ—पुरुषरूप हवि से देवताओं ने जिस यज्ञ का विस्तार किया, वसन्त उसका घृत था, ग्रीष्म समिधा थी और शरद् हवि थी ।

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, फलं समर्पयामि ॥

अर्थ—सात समुद्र उसकी परिधियां थीं, गायत्री आदि इक्कीस छन्द उसकी समिधा थीं । जिस यज्ञ का विस्तार करते हुए देवताओं ने पुरुष पशु को बाँधा था ।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीविष्णवे नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥

अर्थ—इन्द्रादि देवताओं ने यज्ञ के द्वारा उस यज्ञ पुरुष का यजन किया था, वे यजनरूप धर्म प्रथम धर्म थे, वे महाभाग्यशाली देवता स्वर्ग का सेवन करते हैं, जहाँ पर पूर्वकाल के साध्य देवता विराजमान हैं । वे देवता इसलिए हैं क्योंकि वे देदीप्यमान हैं ।

सूचना—पुष्पांजलि के बाद यथाशक्ति दक्षिणा चढ़ाकर इष्ट देवता को नमस्कार कर दें ।



श्रीः

श्रीसूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि ।।

अर्थ—हे अग्निदेव, आप सुवर्ण के समान वर्णवाली, हरिणी स्वरूप सुन्दर, सोने-चांदी के पुष्पों की मालाओं से सुशोभित, चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, सुवर्णमय शरीर वाली लक्ष्मी को मेरे घर में ले आओ ।

ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, आसनं समर्पयामि ।।

अर्थ—हे अग्निदेव, आप दूर न जाने वाली, लक्ष्मी को मेरे घर ले आओ, जिसके लाये जाने पर मैं सोना, गौएँ, घोड़े और पुत्र, पौत्र, मित्र, सेवक आदि रूप में पुरुषों को प्राप्त करूँ ।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।
ॐभूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।।

अर्थ—जिसके आगे घोड़े, मध्य में रथ और उनके पीछे हाथी चलते हैं, उन हाथियों को नाद-ध्वनि से प्रसन्न होनेवाली श्री लक्ष्मी देवी का मैं आवाहन करता हूँ, वह श्री लक्ष्मी देवी मुझे सदा प्राप्त रहें ।

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्रावारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।

ॐभूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।।

अर्थ—सुखरूपिणी, मन्द मुस्कान वाली, सुवर्ण के प्रावार (दुशाले) या प्राकार (प्राचीर) वाली, आर्द्र अर्थात् दयालु, प्रकाशमान एवं प्रसन्न, भक्तों को प्रसन्न करती हुई, कमलासन पर विराजमान, कमल के समान वर्णवाली उस लक्ष्मी को मैं यहाँ बुलाता हूँ ।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।

ॐभूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि ।।

अर्थ—स्वर्गलोक में देवताओं से सेवित, चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, प्रकृष्ट कान्तिवाली, देदीप्यमान एवं उदार पद्म-धारिणी लक्ष्मी की मैं शरण लेता हूं, मेरी अलक्ष्मी (निर्धनता) दूर हो, इसलिए हे लक्ष्मी देवि, मैं आपको शरण या रक्षक रूप में वरण करता हूँ ।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, स्नानीयं समर्पयामि ।।

अर्थ—हे सूर्य के समान वर्णवाली लक्ष्मी देवि, आपकी तपस्या से बिल्व नामक वृक्ष प्रकट हुआ, उस बिल्व के पके हुए

फल आपके अनुग्रह से मेरे अन्त:करण की माया या अज्ञान को तथा बाह्य इन्द्रियों के दोषों एवं निर्धनता को दूर करें।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति वृद्धि ददातु मे।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि ।।

अर्थ—हे लक्ष्मी देवि, महादेव का सखा कुबेर, कीर्ति की अधिष्ठात्री देवी दक्षकन्या, कुबेर की कोशशाला चिन्तामणि, मणिभद्र या कोशाध्यक्ष के साथ मेरे समीप आयें। मैं इस भारतवर्ष नामक राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ। यहाँ आकर वे कुबेर महाराज मुझे कीर्ति और समृद्धि प्रदान करें।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।
ॐभूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

अर्थ—भूख और प्यास से मलिन स्वरूप वाली, लक्ष्मी की बड़ी बहिन अलक्ष्मी या दरिद्रता को मैं नष्ट करता हूँ। हे लक्ष्मी देवि, आप सम्पत्ति के अभाव और समृद्धि के अभाव को मेरे घर में से दूर भगा दें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, गन्धमालेपयामि ।।

अर्थ—सुगन्ध द्वारा पहचान वाली, किसी के द्वारा परास्त न की जाने वाली, अन्नादि द्वारा सदा पुष्ट, गोष्ठों (अर्थात् गौ आदि पशुओं से समृद्ध) सब प्राणियों की अधीश्वरी उस श्रीदेवी को मैं जहां अपने घर में बुलाता हूं।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि ।।

अर्थ—हे लक्ष्मी देवि, मन के मनोरथ और संकल्प को एवं वाणी के सत्यभाषण को पशुओं के रूप (दूध दही आदि) को तथा अन्न (गेहूं-चावल) आदि को हम प्राप्त करें । लक्ष्मी और कीर्ति मेरा आश्रय लें (मुझे प्राप्त हों) ।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, पुष्पं समर्पयामि ।।

अर्थ—कर्दम नामक पुत्र से (लक्ष्मी देवी) उत्तम प्रजा या सन्तान वाली हुईं; इसलिए हे लक्ष्मीपुत्र कर्दम, तुम मेरे घर में मेरे साथ रहो । तथा कमलों की माला धारण करने वाली अपनी माता लक्ष्मी देवी को भी मेरे घर या वंश में बसाओ ।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि ।।

अर्थ—जल (के अभिमानी देवता) स्नेहयुक्त कार्यों को सम्पन्न करें । हे चिक्लीत नामक लक्ष्मीपुत्र, तुम मेरे घर में निवास करो और अपनी माता लक्ष्मी देवी को भी मेरे वंश में या घर में निवास कराओ ।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, अमृतस्वरूपं नैवेद्यं निवेदयामि ।

अर्थ—दिग्गजों की सूंडों से नहलाई गई, भीगे अंगों वाली, पुष्टिस्वरूपिणी, पिङ्गल (पीले) रंग वाली, कमलमाला धारिणी, चन्द्र के समान प्रकाशमान, सुवर्णमयी शुभ लक्षणों वाली लक्ष्मी देवी को, हे अग्निदेव, मेरे घर में लाओ।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, फलं समर्पयामि ।।

अर्थ—भीगे अंगों वाली, यष्टि धारिणी, यष्टि जैसी कृश सुन्दर वर्णवाली, स्वर्णमालादि से शोभित, सूर्य के समान सुवर्णमयी लक्ष्मीदेवी को, हे अग्निदेव, मेरे घर में लाओ।

ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।
ॐभूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं स०।।

अर्थ—हे अग्निदेव, कभी न जाने वाली उस लक्ष्मी देवी को मेरे घर लाओ। जिसके आने पर मैं खूब सुवर्ण, गौएँ, दासियाँ और पुत्र, पौत्र, मित्र, सेवक आदि पुरुषों को प्राप्त करूं।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।।

अर्थ—जो व्यक्ति लक्ष्मी देवी की कृपा चाहता हो वह पवित्र और संयत होकर इस पन्द्रह ऋचा वाले सूक्त का सदा जाप करे।

सूचना—पुष्पांजलि के बाद यथाशक्ति दक्षिणा चढ़ाकर देवी लक्ष्मी को प्रणाम कर दें।



श्रीः

रुद्रसूक्त

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषये नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, शम्भुमावाहयामि ।

अर्थ—हे दुःखनिवारक रुद्रदेव, आपके क्रोध को नमस्कार, आपके वाण को नमस्कार और आपको वाहुओं को भी नमस्कार।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, आसनं समर्पयामि ।

अर्थ—हे रुद्रदेव, जो आपका शान्तिमय, सुन्दर तथा पुण्य प्रकाशक रूप है, हे गिरिशन्त (वाणी में स्थित होकर या पर्वत पर अवस्थित रहकर शान्ति देने वाले देव) अपने उस शान्तिप्रद शरीर से सुख देने के लिए आप हमारी ओर कृपादृष्टि करें।

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्रतां कुरु मा हिँसीः पुरुषं जगत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

अर्थ—हे गिरिशन्त और हे गिरित्र (पर्वत में स्थित रहकर भक्तों की रक्षा करने वाले), आप अपने हाथ में जिस वाण को फेंकने के लिये धारण किये हुए हैं, उसको आप कल्याणकारी बना दें, उससे हमारे पुत्र-पौत्रादि पुरुषों और पशुओं को कभी न मारें।

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मँ सुमना असत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।।

अर्थ—हे गिरिश (पर्वत पर शयन करने वाले), हम माङ्गलिक स्तुतिरूप वचन से आपकी प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं कि हमारा सम्पूर्ण जगत् रोगरहित और मन प्रसन्न हो ।

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहीँश्च सर्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातु धान्योऽ-
पराचीः परासुव ।।

ॐभूर्भुवःस्वः शम्भवे नमः, आचमनीयं समर्पयामि ।

अर्थ—देवताओं के मुख्य वैद्य रुद्रदेव जो ऐश्वर्यपूर्वक आदेश देते हैं वे अपने किसी पुरुष को आदेश दें कि सब हिंसक सर्पादियों को और सब अधम स्वभाववाली कष्टप्रद राक्षसियों को नष्ट करता हुआ उन्हें हमसे दूर कर दे ।

ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैनँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाँ
हेड ईमहे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, स्नानीयं समर्पयामि ।

अर्थ--यह आदित्य रूप रुद्र जो उदयकाल में ताम्बे जैसे रंगवाला, मध्याह्न में अरुण (लाल) और अस्त के समय भूरा होता हुआ मङ्गल करता है और जो किरणरूप सहस्रों रुद्र इसके चारों ओर फैले हुए हैं । इनके क्रोध का हम निवारण करते हैं ।

ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, वस्त्रं समर्पयामि ।

अर्थ—यह जो सूर्य अस्त के समय नीलग्रीव (मोर सा) और लाल रंग वाला नीचे उतरता है। उस समय इसे ग्वाले देखते हैं और जल भरने वाली स्त्रियाँ देखती हैं। वह सूर्य देखने पर हमें सुखी करता है।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

अर्थ—नीलग्रीव, सहस्रनेत्र, नित्यतरुण आदित्यरूप रुद्र को नमस्कार हो और जो इसके सत्वभूत रुद्र हैं, मैं उनको भी नमस्कार करता हूँ।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, गन्धमालेपयामि।

अर्थ—हे भगवन्! आप धनुष की डोरी को दोनों सिरों से खोल दें, और आपके हाथ में जो बाण हैं उन्हें दूर फेंक दें।

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अर्थ—जटा-जूटधारी रुद्र भगवान् का धनुष डोरी से रहित है और तरकस भी बाणों से रहित है। इसके जो बाण थे वे लुप्त हो गये हैं और इसकी म्यान भी खाली है।

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।

ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, पुष्पं समर्पयामि ।

अर्थ—हे तरुणतम, श्रेष्ठ वृष्टिकर, जो आपके हाथ में धनुप नामक शस्त्र है, रोगरहित उस धनुप के द्वारा आप हमारी चारों ओर से रक्षा करें ।

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वँ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, धूपमाघ्रापयामि ।

अर्थ—हे सहस्राक्ष ! हे सैकड़ों तरकसों वाले ! आप धनुष को उतारकर और बाणों के मुखों को शान्त करके हमारे लिए शान्तिप्रद हों और प्रसन्न मन हों ।

ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, दीपं प्रदर्शयामि ।

अर्थ—आपके उतारे हुए, घर्षणशील, शस्त्र त्रिशूल आदि को नमस्कार हो। आपकी दोनों भुजाओं को नमस्कार हो और आपके धनुप को नमस्कार हो ।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, इदममृतस्वरूपं नैवेद्यं निवेदयामि ॥

अर्थ—हे रुद्रदेव, आप हमारे बड़े-बूढ़ों को न मारें, हमारे

बच्चों को न मारें, हमारे युवकों को न मारें, हमारे गर्भस्थ शिशु को न मारें। हमारे पिता को न मारें, हमारी माता को न मारें। हमारे प्रिय पुत्र-पौत्रादि के शरीरों को आप न मारें। (अपितु इन सबकी आप रक्षा करें)।

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु
मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा
हवामहे।
ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

अर्थ—हे रुद्रदेव, आप हमारे पुत्र पर, हमारे पौत्र पर, हमारी आयु पर, हमारी गौओं पर और हमारे घोड़ों पर हिंसा का प्रयोग न करें। हमारे क्रोधी वीरों को न मारें, इसीलिये हम हवि से युक्त होकर यज्ञ में सदा ही आपका आवाहन करते हैं।

सूचना—पुष्पांजलि के बाद यथाशक्ति दक्षिणा चढ़ाकर देवता को प्रणाम करें।

चर्पट-पञ्जरी

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते!
प्राप्ते सन्निहिते मरणे, नहि नहि रक्षति 'डुकृञ् करणे'।१।

अर्थ—गुरुजन उपदेश करते हैं, हे जड़मते! तू गोविन्द का भजन कर अन्यथा मृत्यु समीप आने पर 'डुकृञ्करणे' आदि शब्द तेरी रक्षा नहीं कर सकेंगे।

दिनमपि रजनी सायं प्रातः, शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः।२।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते!

अर्थ—दिन होता है, रात्रि होती है, प्रातः और सायं भी होते हैं, शिशिर और वसन्त आदि ऋतुएँ भी बार-बार आती हैं इस प्रकार काल खेल रहा है और हमारी आयु घटती जा रही है तो भी आशा-रूपी वायु हमें नहीं छोड़ती। अतः हे मूढ़ ! गोविन्द का भजन कर।

बालस्तावत्क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः।२।
भज गोविन्दं०…

अर्थ—जब तू बालक था तब खेलने में ही लगा था। जब तू जवान हुआ तब नवयुवतियों में लीन रहा। जब वृद्ध हुआ तो चिन्ता में डूब गया; कभी एक क्षण भी परब्रह्म में चित्त नहीं लगाया। अतः हे अज्ञानी ! अब तो गोविन्द का भजन कर।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं, दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चत्या-
शापिण्डम् ॥४॥ भज गोविन्दं०…

शरीर के सब अङ्ग ढीले पड़ गये हैं, शिर के बाल सफेद हो गये हैं, मुख में दाँत नहीं है, बूढ़ा डंडे के सहारे चलता है तो भी यह वृद्ध आशा का पिण्ड नहीं छोड़ता। अरे मूर्ख ! तू आशा को छोड़कर अब तो गोविन्द का भजन कर।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे, कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥५॥
भज गोविन्दं०…

अर्थ—बार-बार जन्म हुआ और बार-बार मरण हुआ, बार-बार माता के गर्भ में शयन करना रहा, किन्तु तूने इस दुस्तर संसार में आकर कभी यह भी नहीं कहा कि 'हे मुरारे ! मेरी रक्षा करो।' अतः हे मूढ़ ! अब तो गोविन्द का भजन कर।

जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः, काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि न च पश्यति मूढः, उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ।६।
भज गोविन्दं०…

अर्थ—सिर पर जटा बढ़ायी, मूँड मुँड़ाया, बालों को नोच डाला, गेरुआ वस्त्र धारण किया और अनेक प्रकार का भेष बनाया। देखता हुआ भी संसार को नहीं देखता है, केवल पेट भरने के लिए बहुत रूप बनाया। हे मूर्ख ! यह सब प्रपंच छोड़कर गोविन्द का भजन कर।

वयसि गते कः कामविकारः, शुष्के नीरे कः कासारः ।
क्षीणे वित्ते कः परिवारः, ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ।७। भज०

अर्थ—युवा अवस्था बीत जाने पर कामविकार कहाँ रहा ? पानी सूख जाने पर तालाब का क्या महत्व ? धन के अभाव में परिवार का सुख कहाँ। पास में तत्त्वज्ञान हो जाने पर संसार का क्या महत्त्व। अतः हे मन्दमते ! ज्ञान प्राप्त करने के लिए तू गोविन्द का भजन कर।

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू, रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवासः, तदपि न मुञ्चत्याशा-
पाशः ॥८॥ भज गोविन्दं०…

अर्थ—जाड़े के दिनों में सामने आग रखी है और पीठ पीछे सूर्य है। रात्रि में घुटनों के बीच में ठुड्ढी दबाकर बैठे हैं। हाथ पर भीख माँगकर खाते हैं, पेड़ के नीचे निवास करते हैं तो भी मनुष्य आशारूपी बन्धन को नहीं छोड़ता। अतः हे अज्ञानी ! तू आशापाश को छोड़कर गोविन्द का भजन कर।

यावद्वित्तोपार्जनसक्तः, तावन्निजपरिवारे रक्तः ।

पश्चाज्जर्जरभूते देहे वार्त्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥९॥ भज गोविन्द०…

अर्थ—जब तक धन कमाने में लगा रहा तब तक परिवार के लोग भी पूछते रहे। वृद्धावस्था आने पर और शरीर शिथिल हो जाने पर. घर में कोई बात भी नहीं पूछता। अतः हे मूढ़! यह सब छोड़कर गोविन्द का भजन कर।

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम्।१०।भज०

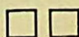
अर्थ—गीता और विष्णुसहस्रनाम गाने योग्य हैं, विष्णु का रूप ही ध्यान करने योग्य है, सज्जनों की संगति में ही मन लगाना चाहिए और दीन लोगों को ही धन देना चाहिये। हे मूर्ख, तू गोविन्द का भजन कर।

भगवद्गीता किञ्चिदधीता, गंगाजललवकणिका पीता।
येनाकारि मुरारेरर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम्।११।भज०

अर्थ—जिसने थोड़ी सी भी गीता पढ़ी हो, गंगाजल की एक बूंद भी पी हों और एक बार भी भगवान् की पूजा की हो तो यमराज उसकी क्या चर्चा करेगा। हे मूर्ख! तू गोविन्द का भजन कर।

कोऽहं कस्त्वं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं सर्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्।१२। भज गोविन्दं०…

अर्थ—मैं कौन हूँ, तू कौन है, कहाँ से आया है, मेरी माता कौन है और पिता कौन है? इन सब झूठे विचारों को असार समझो तथा संसार को स्वप्न समझकर उसे त्याग दो और गोविन्द का भजन करो।



मुद्रक : नवयुग प्रिंटर्स, धर्मपुरा, गांधीनगर, दिल्ली-११००३१